अद्भुत द्वीप



अद्भुत द्वीप

SWISS FAMILY ROBINSON

जे. आर. विस के प्रसिद्ध उपन्यास

अद्भुत द्वीप

जे. आर. विस के प्रसिद्ध उपन्यास
THE SWISS FAMILY ROBINSON
का सरल हिन्दी रूपान्तर



जे.आर. विस के प्रसिद्ध उपन्यास
'The Swiss Family Robinson' का सरल हिन्दी रूपान्तर
रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

₹ 70

ISBN : 9788174830197
संस्करण : 2019 © शिक्षा भारती
ADBHUT DWEEP (Novel) by J. R. Wiss
(Abridged Hindi edition of *The Swiss Family Robinson*)
मुद्रक : जी.एस. ऑफसेट, दिल्ली

शिक्षा भारती
1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006



अद्भुत द्वीप

हमारा जहाज़ आस्ट्रेलिया जा रहा था कि अचानक समुद्र में तूफान आ गया। छह दिनों तक हम लोग तूफान का सामना करते रहे, लेकिन सातवें दिन हमारी हालत बहुत खराब हो गई। तूफान इतना तेज़ था कि जहाज़ में दो छेद हो गए, जिनके कारण पानी अंदर आने लगा। पाल भी बुरी तरह फट गया। जहाज़ को संभालने की हमारी सब कोशिशें बेकार जा रही थीं। और वह बेकाबू होकर हवा के रुख के साथ भागा जा रहा था। हमें पता नहीं था कि हम कहां पहुंचेंगे।

मेरे चारों बच्चे मारे डर के मुझसे चिपके जा रहे थे। पत्नी की आंखों में आंसू छलछला आए थे। बच्चे चुप और डरे हुए थे। उन्हें हिम्मत बंधाते हुए मैंने कहा, "देखो, परेशान मत हो, भगवान पर भरोसा करो। वही हम सबकी रक्षा करेंगे। हमें उन्हीं को याद करना चाहिए।" और हम घुटनों के बल झुककर, हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगे। प्रार्थना के बाद हमें लगा कि अब हममें ताकत लौट आई है। अब हम हर मुसीबत का सामना कर सकते हैं।

कुछ देर बाद एक बहुत ज़ोर का धक्का-सा लगा, मानो

तेज़ भागता हुआ जहाज़ किसी चीज़ से टकरा गया हो। पूरे जहाज़ में खलबली-सी मच गई। तभी एक आवाज़ सुनाई पड़ी। आवाज़ कप्तान की थी, वह कह रहा था, ''जहाज किसी चट्टान से टकरा गया है। जल्दी से सब लोग 'जीवन नौका' पर चढ़ जाएं, नहीं तो बचना मुश्किल है।''

यह सुनते ही, जो जहां जिस हाल में था, वैसे ही दौड़ पड़ा। पत्नी और बच्चों के साथ मैं भी भागा, लेकिन मैं जब तक जीवन-नौका तक पहुंचा, उसकी डोरी जहाज़ से काटी जा चुकी थी। घबराहट में कोई किसी की आवाज़ नहीं सुन पा रहा था। इसलिए हम लोगों का चिल्लाना और आवाज देना बेकार गया। अब मुझे अपने, अपनी पत्नी और चार बच्चों की रक्षा का उपाय अपने ही दिमाग से निकालना था। मैंने चारों ओर नज़र दौड़ाकर देखा। पता चला कि जहाज़ दो चट्टानों के बीच फंसा हुआ था कि तूफान के थपेड़े अब उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे। मैंने सोचा कि किसी तरह रात बिता देनी चाहिए। सुबह कोई उपाय सोचा जाएगा। इतनी खैरियत थी कि जहाज़ के जिस हिस्से में हम थे, वह साफ बच गया था। उसे कोई आंच नहीं आई थी मैंने पत्नी और बच्चों को हिम्मत बंधाते हुए कहा, ''घबराने की कोई बात नहीं है। तूफान शायद सुबह तक थम जाए। तब तक कोई खतरा नहीं है।''

हम सभी दिन-भर के भूखे थे। मैंने पत्नी से खाने का कुछ इन्तज़ाम करने को कहा। पत्नी डरी हुई थी, लेकिन फिर भी वह चुपचाप उठी और खाने की तैयारी करने लगी। थोड़ी देर बाद खाना तैयार हो गया और हम सब खाने बैठे।

खाने के बाद बच्चों को नींद आने लगी और वे जल्दी ही सो गए। लेकिन मुझे रात-भर नींद नहीं आई। मैं जागता रहा और आहट लेता रहा। पत्नी भी मेरा साथ देती रही। जब रात बीत गई और सूरज की लाली फूटने लगी तो मुझे लगा, जैसे हम मौत के मुंह में जाते-जाते बच गये हों। तब तक तूफान सचमुच थम चुका था और समुद्र रोज़ की तरह ही हिलोरें लेने लगा था। मेरा मन खुशी से भर गया। मुसीबत की एक मंज़िल हमने पार कर ली थी।

थोड़ी देर बाद बच्चे भी जग गए। सबसे पहले हम लोग जहाज़ के डेक पर गए और नज़र दौड़ाकर समुद्र के पार देखने की कोशिश करने लगे। एकाएक कुछ मील की दूरी पर कुछ किनारा-सा नज़र आया। तब मैंने दूरबीन लगाकर देखा। दूरबीन से देखने पर पता चला कि कुछ मील के फासले पर निश्चित ही ज़मीन है। जब यह बात पक्की हो गई तो पत्नी मारे खुशी के बच्चों से लिपट गई और बच्चे खुश होकर तालियां बजाने लगे। अब यह कठिनाई थी कि किनारे कैसे पहुंचा जाए! जिस जहाज़ पर हम थे वह तो बिलकुल बेकार ही हो चुका था।

जहाज़ में छानबीन करने पर हमें कई नई बातों का पता लगा। वहां गाय, गधे, बकरियां, सूअर, मुर्गियां और बत्तखें आदि घरेलू और उपयोगी पशु-पक्षी बड़ी संख्या में थे। एक पालतू कुत्ते और कुतिया का जोड़ा भी था जिनके नाम टर्क और फ्लोरा थे। इसी छानबीन में मेरा नन्हा लड़का फ्रांसिस कहीं से मछली फंसाने वाले कांटों का एक पैकेट भी ढूंढ़ लाया। लेकिन हम यह अभी तक भी नहीं सोच पाए थे कि किनारे पर किस तरीके

से पहुंचा जाएगा। सोच-विचार चल ही रहा था कि जैक बोल उठा, "पापा, लकड़ी के कुछ हौज़ रखे हैं। क्या उनसे नाव नहीं बनाई जा सकती ?"

उन हौज़ों को मैं पहले ही देख चुका था, लेकिन नाव बनाने की बात मेरे दिमाग में नहीं आई थी। उसकी सूझ पर मुझे बड़ा अचरज हुआ। मैंने उसे शाबाशी दी और सबको साथ लेकर हथौड़ी, कुल्हाड़ी, कीलें और तख्तों की मदद से नाव बनाने के लिए हौज़ों को एक-दूसरे से जोड़ने लगे।

हमारे पास आठ हौज़ थे। धीरे-धीरे उन सबको लकड़ी के तख्तों और कीलों से एक साथ जोड़ दिया गया। कुछ घंटों की मेहनत के बाद आठ खानों वाली एक लंबी नाव बनकर तैयार हो गई। अब यह तय करना था कि किन चीज़ों को किनारे पर साथ ले जाया जाए और किन्हें दोबारा लेने आना होगा। हमारे पास नाव पर इतनी जगह नहीं थी कि सब सामान और सब लोग एक साथ जा सकते। सबसे पहले हौज़ में मैंने अपनी पत्नी को बैठाया। उसने अपने साथ थैलों में कुछ जरूरी चीज़ें ले लीं। दूसरे हौज़ में मेरा सबसे छोटा लड़का फ्रांसिस और तीसरे में बड़ा लड़का फ्रिट्ज़ बैठे। चौथे और पांचवें हौज़ में खाने-पीने और रहने की जरूरी चीज़ें रख ली गईं। छठवें और सातवें हौज़ में मंझले लड़के जैक और अर्नेस्ट बैठे। सबसे आखिरी यानी आठवें हौज़ में मैं बैठा। हमने दो मुर्गे और मुर्गियों को तो साथ ले लिया लेकिन बत्तखों और कबूतरों को पानी में तैरा दिया। नाव को खेने के लिए हमारे हाथों में डांड़ थे। इस तरह हम लोग किनारे के लिए चल पड़े। थोड़ी देर बाद छपाक् की आवाज़

कानों में पड़ी। मैंने मुड़कर देखा तो पता चला कि टर्क और फ्लोरा भी पानी में कूद पड़े हैं और हमारे साथ-साथ तैर रहे हैं। तैरते-तैरते जब वे थक जाते थे तो हमारे डांड़ों का सहारा ले लेते थे।

सबसे पहले ज़मीन पर पहुंचे टर्क और फ्लोरा, उनके बाद कबूतर और बत्तखें, और सबसे बाद में हमारी आठ खाने वाली नाव! तट पर पहुंचते ही झुण्ड के झुण्ड नारियल के पेड़ देखकर



बच्चे उछल पड़े और बोले, "आहा, नारियल का पानी पीने और ताज़ी गिरी खाने में कितना मज़ा आएगा!"

तट पर पहुंचने के बाद हमें कोई परेशानी नहीं हुई। जहाज़ का फटा हुआ पाल हमारे साथ था ही। इसलिए तट से थोड़ा हटकर एक चट्टान की बगल में हमने एक तंबू खड़ा कर लिया। इधर मैंने तंबू लगाया और उधर पत्नी ने सारा सामान ठीक-ठाक जमा लिया। इधर-उधर पड़े पत्थर के टुकड़े इकट्ठे करके मैंने एक चूल्हा बनाकर, आग जला दी। अब पत्नी प्रसन्न मन से खाने के इंतज़ाम में लग गई।

थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि फ्रिट्ज, अर्नेस्ट और जैक मगन मन चले आ रहे हैं। जब वे पास आ गये तो मैंने देखा कि फ्रिट्ज चट्टानों पर से समुद्री नमक, अर्नेस्ट कुछ बड़ी-बड़ी सीपें और जैक एक ताज़ा मछली ले आया था। मेरा और पत्नी का मन बाग-बाग हो उठा। ये तीनों चीज़ें हमारे बड़े काम की थीं। मछली और नमक जहाँ हमारे भोजन की चीज़ें थीं, वहीं उन बड़ी-बड़ी सीपों से तश्तरियों का काम लिया जा सकता था।

2



हमें अब यह उम्मीद बंध गई थी कि हम हर मुसीबत का सामना कर सकते हैं। जहां एक ओर भगवान मदद कर रहे थे, वहां दूसरी ओर मेरी पत्नी और बच्चे भी अपना फर्ज़ पूरी तरह समझ रहे थे।

कुछ ही देर में खाना बनकर तैयार हो गया और खा-पीकर हम सो गए। दिन-भर कड़ी मेहनत करने के कारण लेटते ही इतनी गहरी नींद आई कि सुबह मुर्गों की बांग के साथ ही हमारी आंख खुली।

रात में नींद अच्छी आई थी, इसलिए सुबह मन में बड़ी ताज़गी थी। नाश्ते के बाद हम यह सोचने लगे कि अब क्या होना चाहिए। फ्रिट्ज का कहना था कि जहाज़ पर वापस चलना चाहिए और बाकी बची चीज़ों को ले आना चाहिए। पर मैं सोच रहा था कि जहाज़ पर तो एक-आध दिन बाद भी जाया जा सकता है, पहले यह पता लगाना चाहिए कि आसपास हमारा कोई और साथी तो नहीं भटक रहा है। आखिर में मेरी बात से सब सहमत हो गये और फ्रिट्ज को साथ लेकर मैं किसी अनजान साथी का पता लगाने निकल पड़ा।

थोड़ी दूर पर एक नदी मिली। नदी पर पुल नहीं था, फिर भी कोई कठिनाई नहीं हुई। उसका पाट ज्यादा नहीं था, बीच-बीच में कुछ पत्थर भी उभरे हुए थे। उन्हीं पत्थरों पर पैर रख-रखकर हमने नदी पार कर ली और दूसरी ओर जा पहुंचे।

नदी के पार दूर-दूर तक ऊंची-ऊंची घास के घने जंगल फैले हुए थे। घास के बीच में रास्ता बनाकर हम आगे बढ़ रहे थे। थोड़ी ही देर में पीछे से कुछ आहट-सी सुनाई दी। हम चौंकर खड़े हो गए। ऐसा लग रहा था जैसे कोई बाघ या चीता घास को रौंदता हुआ चला आ रहा हो। लेकिन जब वह जानवर सामने आया तो हम ठहाका मारकर हंस पड़े। वह और कोई नहीं, हमारा ही पालतू कुत्ता टर्क था। उसे हम साथ लाना भूल गए थे, इसलिए वह हमारा पीछा करता चला आ रहा था।

काफी दूर जाने के बाद हमें एक हरा-भरा जंगल मिला। वहां हरियाली ही हरियाली छाई थी। पास में समुद्र की लहरें थपेड़े खा रही थीं। पेड़ों के ऊपर तरह-तरह की चिड़ियां इधर से उधर फुदक रही थीं। नारियल के ऊंचे-ऊंचे पेड़ों पर बंदर धमाचौकड़ी मचा रहे थे। तभी फ्रिट्ज़ की नज़र ज़मीन पर पड़े एक नारियल पर पड़ी। दौड़कर वह उसे उठा लाया। नारियल तोड़कर हमने उसका पानी पिया और गिरी खाई। पास ही गन्ने उगे हुए थे। फ्रिट्ज़ दो गन्ने तोड़ लाया और काफी देर तक हम उनका मज़ा लेते रहे।

बंदरों की उछलकूद से कुछ नारियल पेड़ों पर से और गिरे। उन्हें फ्रिट्ज़ ने अपनी मां और भाइयों के लिए रख लिया। उनके लिए उसने कुछ गन्ने भी ले लिए। काफी देर तक हम दोनों ढूंढ़ते रहे, लेकिन हमें किसी साथी का पता नहीं चला।

लौटते समय एक दुर्घटना हो गई। एक बंदरिया अपने बच्चे को पीठ पर लादे एक पेड़ पर चढ़ रही थी कि टर्क की नज़र उस पर पड़ गई। उसने दौड़कर ऐसा झपट्टा मारा कि बेचारी बंदरिया का काम तमाम हो गया। यह देख उसका बच्चा उछलकर फ्रिट्ज के सिर पर आ बैठा और बाल कसकर पकड़ लिए। फ्रिट्ज़ दर्द से चीख पड़ा।

किसी तरह कोशिश करके मैंने उस बंदर के बच्चे के पंजों से फ्रिट्ज के बाल छुड़ाए और बंदर के बच्चे को प्यार से पुचकारने लगा। थोड़ी देर में वह शांत हो गया, लेकिन उस पर मां की मौत की उदासी छाई रही। मैंने फ्रिट्ज़ को समझाया कि इसमे उसकी गलती नहीं है। उस बेचारे की मां मर गई है, इसीलिए डरकर उसने ऐसा किया। बात फ्रिट्ज़ की समझ में आ गई। उसने बड़े प्यार से उस बंदर के बच्चे को गोद में ले लिया और हम वापस लौट पड़े।

रास्ते में फ्रिट्ज़ ने कहा, "पापा, यह टर्क बड़ा शैतान हो गया है। बेकार में ही इसने उस बेचारी बंदरिया को मार डाला। मैं इसे इस अपराध की सज़ा दूंगा।" और उसने उस बंदर के बच्चे को टर्क की पीठ पर बिठा दिया। इस बार टर्क कुछ नहीं बोला और उसे पीठ पर बिठाए चलता रहा।

डेरे पर लौटकर फ्रिट्ज ने अपनी मां और भाइयों को नारियल और गन्ने दिए और उन्हें रोमांचक यात्रा का सारा किस्सा विस्तार से सुनाया। उसी दिन उन लोगों ने उस बंदर के बच्चे को अपने पालतू जानवरों में शामिल कर लिया और उसका नाम किप्स रखा। गन्ने और नारियल तो हमें मानो नियामत-से लगे।



3

दूसरे दिन सुबह जहाज़ से बाकी सामान लेने जाना था। मैंने अपने बड़े लड़के फ्रिट्ज को अपने साथ ले जाना तय किया। सुबह होते ही हम नाश्ता करके चल दिए। चलते समय तट पर बालू में मैंने एक बांस में हरे रंग का झंडा लहरा दिया। साथ ही पत्नी को बता दिया कि शायद मुझे समुद्र में ही रात बितानी पड़े इसलिए अगर कोई खतरा आ जाए तो इस झंडे को उतारकर तीन बार बंदूक दाग देना। बस मुझे पता चल जाएगा और मैं चल पड़ूगा।

जहाज़ तक पहुंचकर हमने अपनी नाव को उसके टूटे हुए हिस्से से बांध दिया और डेक पर चढ़ गए। सबसे पहले हमने जानवरों की खोज-खबर ली। वे सही-सलामत थे। एकाएक कई दिनो बाद हमें देखकर वे बड़े खुश हुए। उन्हें खिला-पिलाकर मैं यह सोचने में व्यस्त हो गया कि इस सारे सामान को और जानवरों को डेरे तक कैसे ले जाया जाए। फ्रिट्ज़ का कहना था कि अपनी नाव के अलावा दूसरा कोई उपाय नहीं है। और यदि नाव से ही सारा सामान ढोना है, तो सबसे पहले उसके लिए पाल का इंतज़ाम कर लेना चाहिए। भारी बोझा लाद देने

के बाद नाव काफी वज़नी हो जाएगी और उसे बल्लियों से खेने में बड़ी कठिनाई होगी। इसलिए सबसे पहले हमने फटी-पुरानी कैनवास को ढूंढ़कर नाव में पाल लगाया। अब फ्रिट्ज ने कहा, ''पापा, अब हमें इस नाव का कोई नाम भी रख देना चाहिए।'' मैंने अपनी नाव का नाम 'दि डिलीवरेंस' अर्थात् मुक्ति रख दिया। ठीक भी था, क्योंकि उसी नाव से हम खतरे से बाहर निकले थे।

उस दिन का सारा समय नाव का पाल बनाने और चीज़ों को खोलने-बांधने में लग गया। जहाज़ में तरह-तरह के कपड़े, औज़ार और रसोई का सामान था। खेती-बाड़ी का बहुत-सा सामान और तलवारें, ढालें तथा बंदूकें भी थीं। साथ ही चांदी के कुछ कीमती बर्तन भी थे। पूरी नाव सामान से भर गई। बड़ी मुश्किल से एक-एक हौज़ अपने बैठने के लिए हम खाली रख पाए।

अब यह सवाल था कि जानवरों को उस पार कैसे ले जाया जाए। पहले मैंने सोचा कि एक बेड़ा बनाकर सब जानवरों को उस पर चढ़ा देना चाहिए। लेकिन फिर याद आया कि बेड़े पर तो जानवर ठीक तरह खड़े नहीं रह पाएंगे और उनके समुद्र में गिरकर डूबने का खतरा रहेगा। मैं इसी उधेड़-बुन में था कि इतने में फ्रिट्ज़ तैरने के समय पहने जाने वाले कोट उठा लाया। उसने कहा, ''पापा, अगर एक-एक कोट हम हर जानवर के शरीर पर चारों ओर से लपेटकर बांध दें तो वे आसानी से तैरकर पार जा सकते हैं।''

हमने वही तरीका अपनाया। शुरू में तो कुछ देर तक

जानवर डूबते-उतराते रहे, लेकिन बाद में आसानी से तैरने लगे।

जब हम किनारे पर पहुंचे तो अपने चारों ओर का वातावरण मुझे बहुत ही अच्छा लगा। हम यह भूल-से गए कि हम एक निर्जन और जंगली टापू पर हैं। हमारे पास जरूरत की लगभग हर चीज़ मौजूद थी।

जब मैं जहाज़ से सामान और जानवर लाने गया था तो इधर पत्नी ने भी एक नई खोज कर डाली थी। जहां हमारा तंबू था वहां बालू से, दिन की धूप में, बड़ी तपन रहती थी। एक-एक पल काटना मुश्किल हो जाता था। इसलिए नदी के दूसरी ओर उसने एक हरी-भरी और छायादार जगह खोज निकाली। मैं भी वह जगह देखने गया। देखते ही मेरा मन प्रसन्न हो उठा। वहां झुण्ड के झुण्ड ऊंचे-ऊंचे और हरे-भरे पेड़ थे। पास ही एक सरोवर बह रहा था। चारों ओर बड़ी ठंडक थी। जब मुझे भी वह जगह पसंद आ गई तो पत्नी ने कहा, "कितना अच्छा होता अगर हम लोग इन्हीं पेड़ों पर मचान बनाकर रहते!"

लेकिन यह काम आसान नहीं था। पहली अड़चन तो यह थी कि सारा सामान ढोकर नदी के पार कैसे लाया जाए। दूसरे, मचान बनाने के लिए उतनी ही ऊंची सीढ़ी की ज़रूरत थी, जो हमारे पास नहीं थी। इसलिए मैंने फिलहाल इस योजना को टालना चाहा। लेकिन पत्नी नहीं मानी। उसने कहा, "अगर हम यह तय कर लें कि मचान बनानी ही है तो एक-एक कर सारी अड़चनें अपने-आप दूर हो जाएंगी।"

अन्त में पत्नी के सुझाव पर गहराई के साथ सोचना ही पड़ा। मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि रहने की व्यवस्था तो वहां

कर ली जाए, लेकिन भंडारघर हम तम्बू में ही बनाए रखें। खतरा आने पर यह जगह एक मजबूत किले का काम दे सकती है।

मचान बनाने की बात तय कर लेने पर यह भी ज़रूरी हो गया कि नदी पर पुल बनाया जाए।

पुल बनाने की खबर से बच्चों में एक अजीब-सी खुशी फैल गई। वे दौड़-दौड़कर मेरी सहायता करने लगे। फल यह हुआ कि काम आसान होता गया और दिन-भर में ही हमने नदी पर तख्तों का पुल बनाकर तैयार कर दिया।

जब हम लौटकर अपने तम्बू पर पहुंचे तो पत्नी ने खाने के लिए कई अच्छी-अच्छी चीज़ें बनाकर तैयार कर ली थीं। पुल बन जाने की खबर से उसे भी बड़ी खुशी हुई प्रसन्न मन से हम लोग खाना खाने बैठे। खाना खाने के दौरान पत्नी बोली, "देखो, मैंने कहा था न, कि जहां चाह है वहीं राह है ! हमने कोशिश की और पुल बनकर तैयार !"

अगले दिन सुबह हम जल्दी उठ गए और ज़रूरी सामान बांधने लगे। पत्नी ने सामान ले जाने के लिए, फटे-पुराने खाकी कोटों को मछली के कांटों से सीकर कुछ बोरे बना लिए थे। बोझा ढोने के लिए हमने जानवरों का उपयोग किया और नई जगह के लिए चल दिए।

पुल पार करते समय अचानक हमारे कुत्ते टर्क और फ्लोरा न जाने कहां गायब हो गए। अभी हम इधर-उधर देख ही रहे थे कि अचानक घास के अंदर से भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। वे ऐसे भौंक रहे थे मानो उनकी किसी जंगली जानवर से टक्कर हो रही हो। आवाज़ सुनते ही फ्रिट्ज़ और जैक उस

ओर भागे। मैंने चिल्लाकर उन्हें सावधान करना चाहा, लेकिन जल्दबाज़ी में उन्होंने मेरा चिल्लाना सुना नहीं। क्षण भर के ही बाद जैक चिल्लाया, "पापा ! पापा !! दौड़ो ! जल्दी आओ !!"

आवाज़ सुनकर मेरा पसीना छूट गया। मैंने आव देखा न ताव, बस उसी ओर दौड़ पड़ा। वहां टर्क और फ्लोरा एक जंगली साही के साथ भिड़े हुए थे। लेकिन साही के शरीर पर इतने कड़े कांटे थे कि उनकी एक भी चाल कारगर नहीं हो पा रही थी। तभी एकाएक जैक ने अपने कंधे से बंदूक उतारी और निशाना साधकर घोड़ा दबा दिया। 'ठांय' की आवाज़ हुई और देखते-ही-देखते साही वहीं ढेर हो गई।

इसके बाद हम चल पड़े।

उस रमणीक स्थान पर पहुंचकर लगा मानो हम स्वर्ग में आ गए हों। मैंने सोचा, यहां पेड़ों के ऊपर मचान जैसा घर बनाना और उसमें रहना तो उसी तरह है जैसे परियों के हवामहल में रहना। पेड़ों के ऊपर घर बनाने की बात से बच्चे भी बड़े खुश थे।

मैं और पत्नी तो सामान संभालने में लग गये और बच्चे इधर-उधर दौड़-दौड़कर चारों ओर के इलाके की छानबीन करने लगे। जानवरों को भी, उनके पिछले पैर बांधकर घास खाने के लिए छोड़ दिया गया।

कुछ ही समय बीता होगा कि बंदूक दगने की आवाज़ सुनकर मैं चौंक पड़ा। एक झुरमुट की ओर से फ्रिट्ज भागता हुआ चला आ रहा था। बंदूक उसके हाथ में थी और वह बड़ा

ही खुश दिखाई दे रहा था। "पापा...पापा...मैंने एक चीता मारा है," पास आकर उसने बताया। सुनकर मैं दंग रह गया। जाकर देखा तो सचमुच एक बहुत खूंख्वार चीता मरा पड़ा था। फ्रिट्ज़ का यह काम वास्तव में बड़ा ही साहसपूर्ण और शाबाशी का था।

छोटे-मोटे कामों से निबटकर जब हम थोड़ा हल्के हुए तो देखा कि नन्हा फ्रांसिस जेब से निकाल-निकालकर कुछ खा रहा है। पूछने पर उसने बताया कि एक पेड़ के पास बड़े अच्छे-अच्छे फल बिखरे पड़े हैं। सुनते ही पत्नी को गुस्सा आ गया। उसने डांटते हुए कहा, "तुझे पूछ तो लेना चाहिए था। क्या पता, कौन-सी चीज़ खाने लायक है, कौन-सी नहीं!" ठीक से देखने पर पता चला कि वे गूलर के फल थे। फिर भी हमने अपने सब बच्चों को समझा दिया कि वहां की कोई भी चीज़ बिना अच्छी तरह जांचे-परखे न खाएं। इनमें से कोई चीज़ जहरीली भी हो सकती है।



4

अब हमारे लिए सबसे ज़रूरी चीज़ थी सीढ़ी। बिना सीढ़ी के पेड़ों पर चढ़ पाना मुश्किल था। लेकिन जल्द ही यह अड़चन भी दूर हो गई पास ही बांसों का बहुत बड़ा झुरमुट था। वहां से बांस लाकर आरी और कीलों की मदद से हमने एक अच्छी-सी सीढ़ी तैयार कर ली।

पेड़ पर मचाननुमा मकान किस तरह बनाना है, इसका पूरा नक्शा मेरे दिमाग में खिंच चुका था। जिस पेड़ पर मकान बनाने की बात तय की गई थी, उसकी डालें बिल्कुल सीधी थीं और उनके बीच की चौड़ाई बराबर-सी थी। उन पर तख्ते जड़कर फर्श और जहाज़ के फटे पाल व बांस के टुकड़ों से दीवारें व छत बनाई जा सकती थीं।

दूसरे दिन सुबह होते ही हम सब नया मकान बनाने में जुट गये। मैं कीलें, हथौड़ा, आरी और दूसरी ज़रूरी चीज़ें लेकर पेड़ पर चढ़ गया और फ्रिट्ज़ व उसके भाई नीचे से तख्ते और बांस के टुकड़े पकड़ाने लगे। काम बहुत था। दिन-भर बिना खाये-पिये जुटे रहना पड़ा, तब कहीं सूरज डूबने तक हमारा काम निबट पाया। मचाननुमा मकान बनकर तैयार हो गया।

उस रात हम सब खा-पी कर नये मकान में ही सोए।

नये मकान में सोने और उठने-बैठने की पूरी सहूलियत थी, लेकिन रसोई का इंतज़ाम पेड़ के नीचे ही रखना पड़ा।

अगले दिन रविवार था—छुट्टी का दिन! इसलिए काफी देर तक लेटे-लेटे हम समुद्र की ओर से आती हुई ठंडी हवा का आनंद लेते और सवेरे के समुद्री-दृश्यों को देखते रहे। उधर पत्नी नीचे उतरकर नाश्ते का प्रबन्ध करने लगी। कुछ ही देर मे ताज़े नाश्ते की प्लेटें हमारे सामने आ गईं और हमारे चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे।

नाश्ते के दौरान हम सब आपस में बातें भी करते जा रहे थे। तभी अचानक यह तय हुआ कि अब तक जिन-जिन जगहों और चीज़ों की खोज हमने की है, और जो चीज़ें हमने बनाई हैं उनके नाम भी रखने चाहिए, ताकि बातचीत में कभी परेशानी न आने पाये। काफी सलाह-मशविरा के बाद जगहों और चीज़ों के नाम रख दिए गए।

जिस नाव से हम लोग टूटे जहाज़ से इस टापू पर आए उसका नाम 'दि डिलीवरेंस' तो पहले ही रखा जा चुका था। जहां हमारी नाव किनारे आकर लगी थी, उस जगह का नाम 'सुरक्षातट' तय हुआ, और 'सुरक्षातट' के पास वाले पहले मकान का नाम तय हुआ—तंबू घर। नदी पर हमने जो पुल बनाया था उसे 'फेमिली ब्रिज' पुकारना तय हुआ और मचाननुमा नये मकान का नाम 'घोंसला' निश्चित किया गया।

अंत में मेरे मंझले लड़के अर्नेस्ट ने एक बात और कही। उसने कहा, ''पापा, अब तो यह जगह वीरान नहीं रही न! अब हम सब यहां के निवासी हैं और यह हमारा देश है। इसलिए मेरी इच्छा है कि हम अपने इस टापू को एक देश मानकर इसका भी नाम रख दें।''

अपनी तब तक की सारी मेहनत का असली महत्त्व मुझे उसी समय पता चला। 'इसका मतलब कभी हम लोगों को भी उसी तरह याद किया जाएगा। जिस तरह लोग कोलम्बस और मार्कोपोलो को याद करते हैं! तब तो हर हालत में हमें अपने टापू का नाम रख देना चाहिए,' मैंने मन ही मन सोचा। हम टापू के नाम के बारे में सोच-विचार करने लगे। थोड़ी देर बाद हमने उसका नाम 'अद्भुत द्वीप' घोषित कर दिया।

सोमवार का सुबह मुर्गियों का अजीब-सा शोर सुनकर हमारी नींद टूटी। पत्नी ने कहा, ''यह मुर्गियां भी क्या अजीब हैं! अंडे तो एक भी नहीं देतीं, लेकिन शोर सुबह-सुबह ही मचा देती हैं।''

पत्नी की बात सुनकर मैं उठा और नीचे उतरने लगा। तभी मेरी नज़र बंदर के बच्चे किप्स पर पड़ी। वह उसी कोटर से निकल रहा था। जिसमें मुर्गियां रहती थीं। एक अंडा भी उसके हाथ में था। यह देखते ही मुझे इस बात का पता चल गया कि असली बात क्या है। पत्नी को भी मैंने आवाज़ देकर नीचे बुला लिया और ले जाकर किप्स का कोटर, जिसमें वह रहता था, दिखाया। उस समय भी वहां कई अंडों के खोल पड़े थे। उस दिन हमने तय कर लिया कि रोज़ शाम होते ही किप्स को ज़ंजरी से बांध दिया जाना चाहिए। तभी हम अण्डे पा सकते हैं, नहीं तो वही सारे अण्डे चट कर जाएगा।

सुबह का नाश्ता लेकर मैंने अर्नेस्ट को अपने साथ लिया और तम्बूघर की तरफ चल दिया। वहां से कुछ ज़रूरी चीज़ें लानी थीं।

तम्बूघर से जब हम लौट रहे थे तो घास के बीच एक जानवर दिखाई दिया। उसका आकार भेड़ जैसा था और अगले पैर पिछले पैरों से छोटे थे। देखते ही फ्लोरा उसकी ओर झपटा, लेकिन पकड़ नहीं पाया। यह देखकर मैंने अपनी बंदूक संभाली और निशाना साधकर घोड़ा दबा दिया। मेरा निशाना भी चूक गया। तब तक अर्नेस्ट ने भी अपनी बंदूक दाग दी थी। उसका निशाना सही बैठा और वह जानवर लड़खड़ा कर गिर पड़ा। पास जाकर देखा तो पता चला कि वह कंगारू था। कंगारू के बारे में मैंने सुना तो बहुत पहले था, लेकिन देखने का मौका उसी दिन मिला।



5

रात में सोने से पहले मैंने अपने बच्चों और पत्नी को बताया कि कल मैं जहाज से बाकी सामान लेने जाऊंगा। सुनकर पत्नी की आंखों में आंसू आ गए। समुद्री जीवन से उसे अब चिढ़-सी होने लगी थी। फिर भी किसी तरह मैंने उसे धीरज बंधाया और कहा कि खतरे की कोई बात नहीं है।

सुबह हम समुद्री सफर के लिये चल दिये। 'सुरक्षातट' तक मैं अपने तीनों बच्चों को साथ ले गया, लेकिन वहां से अर्नेस्ट और जैक को वापस कर दिया। उन्हें समझा दिया कि हो सकता है, सामान उठाने-रखने में देर हो जाए और मुझे रात वहीं बितानी पड़े, इसलिए वे परेशान न हों। फ्रिट्ज को साथ लेकर मैंने अपनी नाव 'दि डिलीवरेंस, (मुक्ति) के पाल खोल दिए। थोड़ी ही देर में हम अपने टूटे हुए जहाज़ के पास जा पहुंचे। बचे हुए सामान को देखकर पता चला कि नाव से पूरा न पड़ेगा, हमें एक बेड़ा भी बनाना पड़ेगा। फ्रिट्ज़ की भी यही राय थी। हम दोनों बेड़ा बनाने में जुट गए। उस दिन का पूरा समय बेड़ा बनाने में ही लग गया और हमें टूटे हुये जहाज़ पर समुद्र में ही रहना पड़ा।

सुबह होते ही हम दोनों फिर काम में लग गए। जहाज़ की सभी जरूरी चीज़ें हम एक-एक करके बेड़े पर लादते जा रहे थे। हमने टूटे हुए जहाज़ की खिड़की और दरवाज़े तक निकाल लिए। उनके अलावा हमें और भी ऐसी बहुत-सी चीज़ें मिलीं जिनकी हम वहां उम्मीद तक नहीं करते थे। जैसे एक बक्स में हमें नाशपाती, सेब, संतरा, चेरी आदि तरह-तरह के फलों के पौधे मिले। वे गीली मिट्टी से इतनी सावधानी और होशियारी के साथ पैक किए गए थे कि सूखने या सड़ने न पाएं। उन्हें देखकर फ्रिट्ज बेहद खुश हुआ। उसने कहा, ''पापा अब तो हमें फलों की भी सहूलियत हो जाएगी। हम सेब और संतरे भी पैदा कर सकेंगे।'' मैंने हामी भरी और हम दोनों फिर सामान उठाने-धरने में लग गए।

जहाज़ के अंदर इस तरह की सारी चीज़ें थीं जिनसे किसी निर्जन जगह में आसानी से ज़िन्दगी बिताई जा सकती थी। यहां तक कि दो मस्तूलों वाले छोटे जहाज़ के फुटकर हिस्से भी रखे थे। उन्हें गौर से देखने पर पता चला कि हर हिस्से पर सिलसिले से नंबर पड़े हैं। एक बिलकुल अनजान आदमी भी उन नंबरों की मदद से पूरा जहाज़ बनाकर तैयार कर सकता था, लेकिन वह काम एक दिन का नहीं, हफ्तों का था। इसलिए उसे मैंने अगली बार के लिए छोड़ दिया और बेड़े को 'दि डिलीवरेंस' के पीछे बांधकर वापस लौट पड़े।

उस रात, सोने से पहले मैंने अपनी योजना बच्चों और पत्नी के सामने रखी। मैंने बताया कि यह हमारी खुशकिस्मती है कि कुछ दिनों की मेहनत से एक बिलकुल नया जहाज़ हमारे



कब्ज़े में आ सकता है। मैंने बताया कि इस काम में लगभग सात दिन लग जाएंगे और फ्रिट्ज़, जैक और अर्नेस्ट को भी मेरे साथ लगना होगा। मेरी इस बात से उन तीनों को तो बेहद खुशी हुई, क्योंकि लगातार सात दिन तक समुद्र में रहने का मौका उन्हें मिलने वाला था, लेकिन उनकी मां ने विशेष खुशी ज़ाहिर नहीं की।

जब मेरे तीनों बड़े लड़कों और पत्नी ने कोई विरोध नहीं किया तो हमारे जाने की बात करीब-करीब तय हो गई। अब यह समस्या थी कि पत्नी नन्हे फ्रांसिस के साथ अकेली 'घोंसले'

में कैसे रहेगी? मैंने उससे भी साथ चलने को कहा। लेकिन उसे समुद्री जीवन से चिढ़ थी, इसलिए वह बोली, ''जितने दिन आप लोग वहां काम करेंगे उतने दिन मैं तंबूघर में रहूंगी। शर्त यह है कि रोज़ शाम को आप लोग वापस आ जाया करें।''

पत्नी की इस बात पर हम राज़ी हो गये और उसे तंबूघर में छोड़कर जहाज़ के लिये रवाना हो गए।

पहले दिन हमें बहुत कम सफलता मिली। निराश होकर करीब-करीब हमने अपना इरादा बदल-सा ही दिया। लेकिन वह निराशा अधिक देर टिकी नहीं रह सकी। नये जहाज़ के लोभ ने हमारी हिम्मत बंधाई और हम साहस बटोरकर फिर काम में लग गए। उस दिन लौटते समय चावलों से भरा एक बोरा और मक्खन का एक बक्स जहाज़ पर दिखाई दे गया। इन चीज़ों को देखकर हम सब इतने खुश हुए मानो कोई बड़ी दुर्लभ वस्तु मिल गई हो। सचमुच उस वीरान प्रदेश में ये चीज़ें नियामत ही थीं। वे दोनों चीज़ें हम अपने 'घोंसले' में ले आए। शाम को बड़ा जायकेदार पुलाव तैयार किया गया और उसे हम सबने बहुत प्रसन्नता से खाया।

इस प्रकार हमें दो मस्तूलों वाले उस नये जहाज़ के बनाने में पूरे सात दिन का समय लग गया। रोज़ शाम को हम घर लौट आते और सुबह आठ बजते-बजते फिर चल पड़ते। हम चारों लोगों को जी-तोड़ मेहनत करनी पड़ी। लेकिन उस मेहनत के बदले में हमें जो चीज़ मिली थी, उसका मूल्य कहीं बहुत ज़्यादा था। इसलिए हम सब बेहद खुश थे। अब केवल एक ही समस्या सामने थी कि उस नये जहाज़ को पानी में कैसे

उतारा जाए। उसे हमने पुराने जहाज़ के अंदर ही बनाया था। पानी में उतारने का केवल एक ही तरीका था, वह यह कि पुराने जहाज़ के एक हिस्से को बारूद से उड़ा दिया जाए। काफी सोच-विचार के बाद मैंने वही तरीका अपनाया। जिस तरफ हमारा नया जहाज़ रखा था उसके दूसरी तरफ का सिरा हमने बारूद से उड़ा दिया। इस तरह हमारा नया जहाज़ आसानी से पानी पर आ गया।

अपने नये जहाज़ में हमने हर तरह की सुविधा रखी थी। कोई भी हौसला बाकी नहीं रखा था। उसके डेक पर दो तोपें भी लगा दी थीं। उसे ऊपर से नीचे तक देखकर जितनी खुशी मुझे होती थी उससे कहीं ज़्यादा खुश फ्रिटज़, अर्नेस्ट और जैक थे।

जब हम अपने नये जहाज़ को किनारे पर ले चलने के लिए पूरी तरह तैयार हो गये तो फ्रिट्ज़ ने कहा, ''पापा हमारी इच्छा है कि तट पर पहुंचते ही हम अपनी मां को तोपों की सलामी दें।''

उन तीनों ने इतना काम किया था कि उनकी इच्छा को दबाना मुझे पसंद नहीं आया। मैंने स्वीकृति दे दी।

हमारी आठ खानों वाली नाव 'दि डिलीवरेंस' जहाज़ के पीछे बंधी थी और हम बड़ी शान के साथ अपने नये जहाज़ को 'सुरक्षातट' की ओर लिये जा रहे थे।

'सुरक्षातट' पर पहुंचते ही हमने दो तोपें दागकर सलामी दी। तोपों की आवाज़ से चारों ओर का वातावरण गूंज उठा। आवाज सुनकर नन्हा फ्रांसिस और उसकी मां भी तंबूघर से

बाहर आ गए। जैसे ही हम लोग जहाज़ से नीचे उतरे उन्होंने आगे बढ़कर प्रसन्नता से हमारा स्वागत किया।

नये जहाज को देखकर पत्नी भी बेहद खुश थी। उसने कहा, "सचमुच यह जहाज़ बहुत कीमती है! मुझे मालूम नहीं था कि रोज़-रोज़ आप लोग इसी के लिए समुद्र में जाते हैं, नहीं तो मैं भी आपके साथ चलती और आपकी मदद करती।"

"तो तुम यह क्यों समझती हो कि तुमने मदद नहीं की है! घर की देखभाल, सबके खाने-पीने की व्यवस्था—यह सब भी तो इसी का एक हिस्सा था !" मैंने पत्नी को समझाया।

उसी समय मुझे ध्यान आया कि हमने अभी तक अपने इस नये जहाज़ का नाम नहीं रखा है। मैंने बच्चों की ओर इशारा करके पूछा, "बच्चो, अब हमें अपने इस जहाज़ का नाम भी रख लेना चाहिए। मेरी इच्छा है कि इसका नाम तुम्हारी मां के नाम पर रखा जाए। बोलो, तुम्हारी क्या राय है?" बच्चों ने एक साथ कहा, "मंजूर है ! मंजूर है !!" और मैंने घोषणा कर दी, "आज से हमारे इस जहाज़ का नाम 'दि एलिज़ाबेथ' होगा।" जैसे ही मैंने नाम की घोषणा की वैसे ही बच्चों ने अपना उल्लास प्रकट करने के लिए एक बार फिर तोप दागी।

जितने दिनों फ्रिट्ज़, अर्नेस्ट, जैक और मैं समुद्र में 'दि एलिज़ाबेथ' के बनाने में व्यस्त रहे, मेरी पत्नी भी बेकार नहीं रही। जब उसने अपने किए हुए काम की जानकारी हम लोगों को दी तब पता चला कि उसने भी एक महत्त्वपूर्ण काम पूरा कर लिया था। वह हम लोगों को नदी के एक मनमोहक किनारे की ओर ले गई। वहां एक झरना था। झरने के पास ही बड़ी

मेहनत से तैयार की गई सब्ज़ियों की एक बाड़ी थी। बाड़ी में बड़ी सुन्दर-सुन्दर क्यारियां बनी हुई थीं। एक ओर से दूसरी ओर जाने के लिए रास्ते थे। आलू, मटर, सेम और गन्ने की वे क्यारियां नन्हे फ्रांसिस और मेरी पत्नी ने तैयार की थीं। पास ही पहाड़ी के निकट अनानास के नन्हें-नन्हें पौधे लहलहा रहे थे और पेड़ों के बीच-बीच तरबूजों की बेलें फैली हुई थीं। पत्नी ने बताया कि "बाड़ी के लिये जगह का चुनाव करते समय मैंने सबसे ज़्यादा ध्यान सिंचाई की सुविधा का रखा। यह जगह नदी के इतनी पास है कि बांस के नलों से बड़ी आसानी से सिंचाई की जा सकती है।"

सब्ज़ी की उस बाड़ी को देखकर मेरे आनन्द की सीमा न रही।

अगले दिन सुबह मैंने अपने सारे सामान की जांच की। मालूम हुआ कि हमारा बारूद और कारतूसों का स्टाक रोज़ की जरूरत को देखते हुए बहुत ही कम रह गया था। इसलिए कोई नया उपाय सोचना पड़ेगा। मैंने वह नया उपाय सोचा तीर-कमान के प्रयोग का। मैंने अपने बच्चों को भली-भांति तीरकमान चलाना और उससे निशाना साधना सिखा दिया। वे जल्द-ही उस कला को सीख गए और हमारा कारतूसों का खर्च कम हो गया।

इसी बीच अपने जानवरों के लिए हमने एक कोठरी भी 'घोंसले' वाले पेड़ के पास बना ली।



6

दुर्भाग्य से बरसात बहुत जल्दी शुरू हो गई। एक बार पानी बरसना शुरू हुआ तो फिर कई हफ्ते तक रुका ही नहीं। एक बार के भीगे बिस्तर-कपड़े सूख न पाते कि दुबारा फिर भीग जाते। रात में जब हम मीठी-मीठी नींद में सो रहे होते कि बारिश शुरू हो जाती और हवा के तेज़ झोंकों से हमारे बिस्तर भीग जाते। आखिर में हमने यह तय किया कि बरसात का मौसम हम जानवरों वाली कोठरी में बिताएंगे।

उन दिनों खाना पकाने का काम नहीं ही हो पाता था क्योंकि न तो सूखी लकड़ियां मिल पाती थीं और न दूसरी सहूलियतें ही थीं। इसलिए कच्ची सब्ज़ियों, फलों और दूध से काम चलाना पड़ता। जब कभी लकड़ियों की व्यवस्था हो जाती तो रोटियां पका ली जातीं और अंडे उबाल लिए जाते। अंडों से पूरा न पड़ता तो रोटियों पर शहद लगाकर काम चलाते।

ऐसी हालत में दिन का हमारा सारा समय जानवरों की देख-भाल और दूध दुहने में बीतता था। लेकिन जैसे ही अंधेरा घिरने लगता, दो-तीन मोमबत्तियां जलाकर मेज़ के बीचों-बीच रख दी जातीं और सब लोग उसके चारों ओर बैठ जाते।

पत्नी-सीने-काढ़ने का काम करती रहती और मैं बच्चों की मदद से इस द्वीप के अपने अनुभव लिखता रहता। मैं बोलता जाता था और अर्नेस्ट अपनी सुंदर लिखावट में उन्हें लिखता जाता था। फ्रिट्ज़ और जैक ड्राइंग में माहिर थे, इसलिए चित्रकारी का काम उनके ज़िम्मे था। आज सोचता हूं कि अगर उन बच्चों ने मेरी मदद न की होती तो शायद यह किताब आपके हाथों में न पहुंच पाती।

अपने इन सब कामों के साथ-साथ हम नन्हें फ्रांसिस को पढ़ाते भी थे। एक दिन की बात है कि सामान वाले बक्स में से फ्रिट्ज़ को 'राबिन्सन क्रूसो' नाम की एक किताब मिल गई। उसने वह किताब मुझे दिखाई। मैंने कहा, "बेटे, यह किताब हमारे लिए बड़ी ज़रूरी और लाभदायक है। राबिन्सन क्रूसो ने भी हमारी ही तरह एक द्वीप में अकेले मुसीबतों का सामना किया था। हमारी ही तरह उसका भी जहाज़ बीच समुद्र में टूटा था और निर्जन टापू में चट्टान काटकर उसने अपने लिए रहने की जगह बनाई थी।" उस रात हम लोगों ने और कुछ नहीं किया, केवल 'राबिन्सन क्रूसो, की कहानी पढ़ते-सुनते रहे।

सात दिन तक लगातार पानी बरसने के बाद जब बादल छंटे और धूप निकली तो हमें कुछ राहत मिली। जब हम उस कष्टदायी कोठरी से बाहर आए तो लगा जैसे कैद से छुटकारा मिला हो। अब सबसे पहले घोंसले की मरम्मत और सफाई करना जरूरी था। इस काम में कई दिन लग गए। न जाने कितना कूड़ा और घास-फूस वहां इकट्ठा हो गया था।

घोंसले की सफाई के बाद तंबूघर जाने की बात तय हुई।

वहां की हालत का पता लगाना बहुत जरूरी था।

तंबूघर जाने पर हमने देखा कि वह भी बड़ी खस्ता हालत में था। तंबू के चारों ओर का कपड़ा बुरी तरह फट गया था और कई चीज़ें बिलकुल नष्ट हो गई थीं। हमारा नया जहाज़ 'दि एलिजाबेथ' तो सही-सलामत था, लेकिन आठ खानों वाली 'दि डिलीवरेंस' करीब-करीब बेकार हो चुकी थी। यही नहीं, बारूद के दो बक्सों के अंदर भी पानी पहुंच गया था और बारूद जम गई थी। अब यह आवश्यक था कि जितनी बारूद ठीक हालत में है, उसके लिए दुबारा बारिश शुरू होने से पहले ही कोई सुरक्षित जगह बना ली जाए।

फ्रिट्ज़ और जैक लगातार किसी ऐसी जगह की खोज कर रहे थे जहां गुफा बनाई जा सके। लेकिन मुझे अधिक उम्मीद नहीं थी। चट्टानें इतनी कड़ी और ठोस थीं कि उनकी खुदाई करना बहुत ही कठिन था। ऐसी हालत में पूरे परिवार के रहने योग्य गुफा बना पाना बालू से तेल निकालने के समान था। फिर भी, बाकी बची बारूद की हिफाज़त के लिए एक छोटी-मोटी खोह तो बनानी ही थी। इसलिए अंदाज से एक जगह हमने गड्ढा खोदना शुरू कर दिया। शुरू-शुरू में थोड़ी परेशानी हुई। लेकिन जैसे ही हम ऊपरी चट्टान काटकर आगे खोदने लगे तो पत्थरों का कड़ापन कम होने लगा और काम आसान होता गया। पत्थर काटने का काम हम हथोड़ों और लोहे के छेनीनुमा लम्बे डण्डों से कर रहे थे। हालांकि काम बहुत कठिन था लेकिन हमारे बच्चों में उत्साह भी कम नहीं था। वे प्रसन्न मन से मेरी मदद कर रहे थे। इसलिए दो दिनों में ही हमने सात फीट गहरा



गड्ढा खोद डाला।

तीसरे दिन एकाएक जैक की विस्मयपूर्ण आवाज़ सुनाई दी, "अरे पापा, अरे पापा, यह तो नीचे धंस गया!" वह छेनीनुमा डंडे की ओर इशारा करते हुए कह रहा था। हमने देखा, सचमुच डंडे का आधे से अधिक हिस्सा नीचे धंसा हुआ था। जब हमने उसे ऊपर को खींचा तो तनिक भी ज़ोर नहीं लगाना पड़ा। डंडा बड़ी आसानी से बाहर निकल आया और उस जगह एक छेद बन गया।

जब उस छेद को थोड़ा और बड़ा किया गया तो लगा, जैसे अंदर से ज़हरीली गैस बाहर निकल रही है। वहां सचमुच एक गुफा थी। मैंने इधर-उधर से थोड़ी-सी सूखी घास इकट्ठा की और उसे जलाकर अन्दर फेंका। लेकिन अन्दर जाते ही घास बुझ गई और एक तेज़ झोंके के साथ बाहर आ गई। ऐसा लगा मानो अन्दर से किसी ने तेज़ी-से उसे बाहर ठेल दिया हो। इससे मेरी बात की पूरी तरह पुष्टि हो गई। गुफा के अन्दर ऐसी गैस भरी हुई थी जिसमें आग नहीं जल सकती।

इसलिए मैं तंबूघर गया। वहां से दो रॉकेट ले आया और उन्हें मैंने आग लगाकर अन्दर फेंक दिया। रॉकेटों के दगते ही बहुत जोर की आवाज़ और बिजली कौंधने जैसी रोशनी हुई। उस रोशनी से गुफा के अन्दर की झलक-भर मिल पाई। तब मैंने फिर सूखी घास जलाकर अन्दर फेंकी। इस बार पहले की तरह नहीं हुआ। घास अन्दर जलती रही। इससे पता चला कि अन्दर की ज़हरीली गैस रॉकेटों के दगने से साफ हो गई है। घास के जलने से अन्दर जो रोशनी हुई उसमें हमें कुछ अधिक

देर तक गुफा के अन्दर देखने का मौका मिला। गुफा बहुत बड़ी थी और बड़ी ही सुंदर थी।

अब हमें मोमबत्ती की ज़रूरती थी और मोमबत्ती तंबूघर में थी नहीं। उनका स्टाक 'घोंसले' में ही था। इसलिए मैंने जैक से जल्द से जल्द वहां जाकर मोमबत्ती का पैकेट लाने को कहा। उसे लौटाने में तीन-चार घंटे का समय लग गया। जब वह लौटा तो उसके साथ उसकी मां और नन्हा फ्रांसिस भी था। सभी के चेहरों पर खुशी छाई हुई थी।

जब सब लोग इकट्ठे हो गए तो हमने गुफा के अन्दर जाने का निश्चय किया। सभी ने एक-एक जलती हुई मोमबत्ती हाथ में ले ली और गुफा में प्रवेश किया। सबसे आगे मैं था, मेरे बाद बच्चे थे और सबसे पीछे मेरी पत्नी। सभी के मन में भय और कौतूहल का एक मिलाजुला भाव उमड़ा हुआ था। यहां तक कि हमारे कुत्ते भी बिल्कुल चुप थे। हम कुछ ही कदम गुफा के अन्दर बढ़े होंगे कि आश्चर्य और विस्मय से भर उठे। वहां का दृश्य बड़ा ही अद्‌भुत और खूबसूरत था। हर एक कोना हीरे की तरह चमक रहा था और हमारी मोमबत्तियों की रोशनी उन पर इस तरह पड़ रही थी मानो आतिशबाज़ी छुड़ाई जा रही हो। गुफा की अंदररूनी छत में फानूसनुमा बहुत से कंगूरे नीचे की ओर लटके हुए थे। ऐसा लग रहा था जैसे यह कोई प्राकृतिक गुफा नहीं, बल्कि बड़े परिश्रम से बनाया गया महल या परियों का निवास स्थान हो। हम लोग जैसे-जैसे जिस-जिस तरफ मुड़ते थे, मोमबत्तियों की रोशनी भी उसी तरफ मुड़ती जाती थी। इस अंधेरी और भव्य गुफा में रोशनी का यह खेल

बड़ा ही अद्‌भुत और मनोहर लग रहा था जैसे स्वप्न देख रहे हों।

गुफा का फर्श एकदम समतल था और उस पर सफेद रंग की मुज़ैकनुमा डिज़ाइन बनी हुई थी। सीलन का तो नाम तक न था। गुफा के अन्दर का पूरा निरीक्षण करने के बाद हमने यह तय किया कि पहले हमें अपनी ज़रूरत के अनुसार इसकी मरम्मत करनी चाहिए, तभी यहां आना ठीक रहेगा। अगले दिन से हमने गुफा की मरम्मत का काम शुरू कर दिया।

गुफा में हमने कई अलग-अलग कमरे बनाए। बेकार पत्थरों से मेज़-कुर्सियां तथा सजावट योग्य मूर्तियां गढ़ीं। सभी चीज़ों को व्यवस्थित किया। कमरों की व्यवस्था इस तरह रखी कि एक ओर रहने के कमरे और दूसरी ओर भण्डारघर तथा जानवरों वाले कमरे थे। तीसरे कोने पर रसोईघर बनाया गया। रसोईघर से धुआं बाहर निकालने का हमने खास प्रबंध किया। हमारे पास, सामान में, तीन खिड़कियां भी थीं। उनमें से एक-एक तो हमने सोनेवाले कमरों में लगा दीं और एक को रसोईघर में लगा दिया ताकि रोशनी और साफ हवा मिल सके।

इन सब कामों में कई दिन लग गए। लेकिन हम निराश नहीं हुए। हम सब रोज़ नये उत्साह के साथ जुट जाते और काम का एक हिस्सा निबटा डालते। और इस तरह हमने एक दिन 'घोंसलें' का ज्यादातर सामान अपने इस नये घर में इकट्ठा कर लिया।

सुरक्षा-तट पर लम्बे अर्से तक रहने के दौरान हमने दो और नई खोजें कर ली थीं। हमने देखा था कि आये दिन बड़े-बड़े समुद्री कछुए पानी से निकलकर किनारे की बालू पर लेट जाते

हैं और काफी देर तक पड़े रहते हैं। हम अपने भोजन में कुछओं के मांस का उपयोग कर सकते थे। सुन रखा था कि यह बड़ा ही स्वादिष्ट होता है। एक दिन हम एक कछुए को पकड़ने में सफल हो गए। घर लाकर उसका मांस पकवाया गया। जब खाने बैठे तो सभी 'वाह-वाह' कर उठे। पत्नी बोली, "क्या ही अच्छा हो कि हमें रोज़ एक कछुआ मिलता रहे!" लेकिन रोज़ तो कछुए आते नहीं थे। इसलिए हमने यह तय किया कि हमें कोई ऐसा उपाय करना चाहिए कि एक ही बार में बहुत सारे कछुए पकड़े जा सकें। और उन्हें काफी दिनों तक जिन्दा रखा जा सके।

मैं अभी सोच ही रहा था कि अर्नेस्ट बोला, "पापा, आपको याद होगा कि हमें टूटे हुए जहाज़ पर से अपने सामान में मछली का एक बहुत मज़बूत जाल भी मिला था। शायद उससे काम बन सके।"

अर्नेस्ट अभी अपनी बात खतम भी नहीं कर पाया था कि फ्रिट्ज़ उछल पड़ा। चेहरे पर खुशी और प्रसन्नता के विचित्र-से भाव लाकर वह बोला, "बस-बस, बात बन गई। हम उसी से एक ही बार में बहुत सारे कछुए पकड़ सकते हैं।"

"भला, कैसे ?" मैंने पूछा।

"बस, पापा, आप पूछिए कुछ नहीं। जो मैं कहूं उसे आप सब लोग करते जाइए।"

मैं चुप हो गया। कुछ ही देर मे अर्नेस्ट और फ्रिट्ज़ मछली का जाल ले आए। फ्रिट्ज़ अपने साथ लकड़ी का एक मोटा डंडा और हथौड़ा भी लाया। डंडे का एक सिरा नुकीला था और

उसे जमीन में गाड़ा जा सकता था। कछुए उस समय भी काफी तादाद में बालू के ऊपर लेटे हुए थे। उनसे कुछ ही दूरी पर फ्रिट्ज़ ने उस डंडे को गाड़ दिया और जाल का एक सिरा उससे बांध दिया। इसके बाद हम सबने जाल का एक-एक सिरा पकड़ा और खूब चौड़ा तानकर बड़ी सावधानी के साथ उन कछुओं पर फैला दिया। जाल फैलाते ही बालू पर लेटे सारे के सारे कछुए जाल में फंस गए। हालांकि फिर भी उन्होंने समुद्र में भागने की कोशिश की, लेकिन वे भाग न सके।

अब हमारे सामने यह समस्या थी कि उन्हें किस तरह रखा जाए। इसके लिए भी हमने एक उपाय सोच ही लिया। हमारे बच्चों ने सारे कछुओं को पीठ के बल पलट दिया और मैंने उनके ऊपरी हिस्से पर दोनों ओर एक-एक छेद करके रस्सियां फंसा दीं। बाद में उन रस्सियों को पास के पेड़ों में बांध दिया। इस तरकीब से दो फायदे हुए। एक तो यह कि कछुए चल-फिर सकते थे, पानी में जा सकते थे और जिन्दा रह सकते थे, दूसरे यह कि भाग नहीं सकते थे। ज़रूरत पड़ने पर उनका उपयोग किया जा सकता था।

सुरक्षा-तट के पास पानी में सील मछलियां भी आती रहती थीं। एक बार मेरे बच्चे हारपून (मछली मारने वाली बरछी) की मदद से कुछ सील मछलियां पकड़ चुके थे। वे हमारे लिए बड़ी फायदेमन्द साबित हुई थीं। उनके चमड़े से हमने अपने घोड़ों के लिए ज़ीन तैयार की थीं और चर्बी से साबुन बनाया था। वे वहां इतनी भारी तादाद में थी कि जब भी नज़र पड़ती, शिकार करने की इच्छा होने लगती। लेकिन इसके लिए एक छोटी डोंगी

की जरूरत थी। मैं सोचता रहता, कि अगर इस समय डिलीवरेंस (नौका) हमारे पास होती तो कितना मज़ा आता। वैसे तो एक नाव हमारे पास और भी थी, लेकिन वह इतनी बड़ी थी कि उससे मछली का शिकार करना संभव न था। इसलिए मैंने सोचा कि एक पेड़ को काटकर उसके तने से एक ऐसी नाव बनानी चाहिए जो मछली का शिकार करने के काम आ सके। लेकिन वहां, समुद्र के किनारे बड़े पेड़ न थे। जब मैंने अपना यह विचार बच्चों को बताया तो वे भी राज़ी हो गए और कहा कि जैसे भी संभव हो, हमें एक बड़े पेड़ की तलाश करनी चाहिए।

सबसे पहले हम अपने पुराने निवास-स्थान पर गए। हालांकि ज़्यादातर सुरक्षा-तट पर रहने के कारण काफी दिनों से वहां कि देखभाल न हो सकी थी, लेकिन जाकर मैंने देखा कि सब कुछ ठीक-ठाक ही है। मेरी पत्नी ने वहां जो बागवानी की थी, वह पूरी तरह हरी-भरी थी और लहलहा रही थी। छोटे-छोटे खेतों में हमने जौ, मटर और गेहूं बो रखे थे। वे पूरी तरह पक चुके थे और काटे जाने की राह देख रहे थे। इसलिए हमने सोचा कि सबसे पहले फसल काटने का काम निबटा देना चाहिए। बात की बात में सारे लोग जुट गए और दो दिनों के अंदर कटाई का काम समाप्त हो गया। उन खेतों में जो अनाज पैदा हुआ वह इतना काफी था कि बीज के लिए अलग निकाल देने के बाद भी हम छः महीने बड़े आराम से गुज़ारा कर सकते थे। हमारे परिवार पर इस पैदावार का असर यह पड़ा कि सभी यह चाहने लगे कि हमें अपने खेती-बारी के काम को और बढ़ाना चाहिए।



7

अब हमारे पास जानवरों और पक्षियों की संख्या बहुत बढ़ गई थी। ज़रूरत से कई गुना ज़्यादा जानवर और पक्षी इकट्ठे हो चुके थे। सबसे बड़ी समस्या यह आ खड़ी हुई कि उनकी देखभाल कैसे की जाए और उनके खाने पीने का बंदोबस्त कैसे हो। मेरी पत्नी का और मेरा विचार यह था कि उन्हें पास के किसी ऐसे टापू पर छोड़ देना चाहिए जहां वे स्वयं अपने चारे की तलाश कर जिंदा रह सकें।

बात तय हो गई। अपनी ज़रूरत के अनुसार हमने कुछ मुर्गियां, दो अच्छे मुर्गे, चार सुअर, चार भेड़ें और दो बकरे रख लिए। बाकी जितने भी जानवर थे, उन्हें साथ लेकर हम किसी नई जगह की खोज में निकल पड़े। फ्रिट्ज़ अपने घोड़े पर था और आगे-आगे चल रहा था।

काफी लंबा सफर तय कर लेने के बाद हम एक नई जगह पहुंचे। रास्ते भर ऊंची-ऊंची घास और कांटेदार झाड़ियां दिखाई देती रही थीं। लेकिन जिस जगह हम पहुंच गए थे वहां न ऊंची-ऊंची घास थी, न कांटेदार झाड़ियां। वहां लम्बा-चौड़ा खुला हुआ मैदान था और छोटे-छोटे पौधे ज़मीन पर गद्दे की तरह

बिछे थे। तभी फ्रांसिस ने अंगुली से इशारा करते हुए उतावली के साथ कहा, ''पापा-पापा, देखो तो कितनी सारी बर्फ यहां बिछी पड़ी है। आओ, हम सब लोग यहीं रुक जाएं और बर्फ पर खेलें।''

फ्रांसिस के मुंह से बर्फ के बारे में सुनकर मुझे हंसी आ गई। मैंने सोचा कि भला ऐसे गर्म मुल्क में बर्फ कहां से आ सकती है। लेकिन तभी मुझे सच्चाई का पता चल गया। वहां ज़मीन पर जो छोटे-छोटे पौधे गद्दे की तरह बिछे दिखाई दे रहे थे वे वास्तव में कपास के पौधे थे। जैसे ही मुझे इस बात का पता चला, मेरी खुशी का ठिकाना न रहा, क्योंकि मैं जानता था कि कपास दुनिया की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण चीज़ है।

शुरू-शुरू में, जब यात्रा के दौरान हमारे जहाज़ की दुर्घटना हुई थी और हम लोग समुद्र में बेसहारा रह गए थे तो मुझे लगा था कि शायद हमारी किस्मत सबसे ज़्यादा खराब है। लेकिन जैसे ही हम लोग समुद्र से बाहर आए, पग-पग पर मुझे यह अनुभव होता रहा कि किस्मत लगातार हमारा साथ दे रही है। हम अगर एक चीज़ की तलाश में निकलते हैं तो नौ और चीज़ें अपने आप हमें मिल जाती हैं।

कपास की खोज से हम सबके चेहरे खिल उठे थे, लेकिन फ्रांसिस उदास हो गया था। उसका एक खूबसूरत सपना टूट गया था, बर्फ पर खेलने का सुख लुट गया था। मेरी पत्नी ने उसको समझाते हुए कहा, ''बेटे, इसमें दुखी होने की ऐसी क्या बात है! देखो, कितने खूबसूरत, सफेद और कोमल हैं कपास के ये फूल! जितने अच्छे ये हैं, बर्फ उतनी अच्छी कभी नहीं

हो सकती।...''

लाख समझाने के बाद भी फ्रांसिस के चेहरे पर मुस्कान नहीं दिखाई दी। यह पहला मौका था, जब हमारे परिवार के किसी सदस्य को अपने आस-पास की चीज़ों के बजाय किसी और चीज़ की इच्छा हुई। अंत में, जब सारे उपाय करके हम हार गए और फ्रांसिस खुश न हुआ तो पत्नी ने उसे लालच देते हुए, कहा, ''अच्छा, आज अगर तू खुश-खुश रहेगा तो वापस लौटने पर मैं तेरे लिए एक नई कमीज बना दूंगी।''

यह उपाय ज़्यादा सफल साबित हुआ। नई कमीज़ के लालच में फ्रांसिस बर्फ पर खेलने की बात भूल-सा गया।

यह नई जगह मुझे बहुत अच्छी लगी। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई दे रही थी। कपास के फूल उस हरियाली को और भी ज़्यादा खूबसूरत बना रहे थे। वहां की ज़मीन इतनी ज़्यादा उपजाऊ थी कि मेरे मन में आया कि क्यों न हम यहां आकर ही अपना खेती-बारी का काम फैलाएं। तभी हमारी नज़र एक ऐसी जगह पड़ी, जिसे छोड़ने को मन नहीं कर रहा था। वह एक ढालू और उपजाऊ जगह थी। आस-पास जंगली फूलों और फलों की झाड़ियां थीं और पास में शीशे जैसे साफ जल वाली एक नदी बह रही थी। मुझे लगा कि हमारे जानवर और पक्षी शायद यहां ज्यादा आराम से रह सकेंगे।

यहीं मुझे चार विशालकाय वृक्ष भी दिखाई दिए। उन वृक्षों की शाखाएं काफी मोटी थीं और बहुत ऊंची नहीं थी। पत्नी ने कहा कि इन पर मचान बहुत अच्छी बन सकती है। जिस समय पत्नी ने यह बात कही, ठीक उसी समय मेरे मन में भी

वही बात उठ रही थी। इसलिए मचान बनाने की बात तय हो गई और हम सब लोग काम में जुट गए। चूंकि मचान और झोंपड़े बनाने का हमें अब तक बड़ा अभ्यास हो चुका था, इसलिए इस काम में न तो हमें कोई कठिनाई हुई और न देर ही लगी।

मचान बनाने के बाद हमने जमीन पर अपने जानवरो के लिए एक बहुत बड़ा झोंपड़ा भी बनाया। उसको कई हिस्सों में बांटा गया था। एक हिस्से में मुर्गियों का दड़बा था, एक बड़े हिस्से में बकरी और भेड़ों के खूंटे थे और एक हिस्से में उनके दाने और चारे की व्यवस्था थी। मचान के ऊपर अपने आराम के लिए हमने रुई के बने दो गुदगुदे गद्दे बिछा रखे थे, ताकि जब भी हमें वहां रात गुज़ारनी हो तो तकलीफ न हो।

मचान और झोंपड़े का काम निबटाने के बाद अर्नेस्ट और मुझको छोड़कर बाकी लोग वापस लौट गए। मेरी इच्छा यह थी कि आस-पड़ोस की जगहों की थोड़ी छान-बीन और करनी चाहिए। इसलिए हम दोनों रुक गए थे। हालांकि अर्नेस्ट अपने दूसरे भाइयों जैसा चतुर-चालाक न था, लेकिन उसकी निगाह बड़ी तेज़ थी और स्वभाव बड़ा ही शांत। इस बात की भी उसे हर समय ललक रहती थी कि नई से नई चीज़ों की जानकारी प्राप्त करे। इसीलिए मैंने उसे अपने पास रोक लिया था।

खोजबीन के दौरान हमें एक बहुत ही खूबसूरत झील दिखाई दी। उसे देखते ही मुझे अपने देश स्विट्ज़रलैंड की एक अत्यंत प्रसिद्ध झील की याद हो आई। यह भी हूबहू उसी के

जैसी थी। इसलिए बहुत रोकने के बाद भी मेरी आंखों में आंसू छलछला आए। भला ऐसा कौन अभागा आदमी होगा जो अपनी मातृभूमि से दूर होकर भी उसकी याद आने पर रो न पड़े। और फिर, हमें तो अब वापस लौटने की भी कोई उम्मीद न थी। इसीलिए मुझे अपने देश की याद काफी देर तक परेशान करती रही।

उस झील में बहुत-से हंस भी तैरते दिखाई दिए। लेकिन वे दूसरे हंसों जैसे सफेद न थे। उनका रंग काला था। अचानक मुझे याद आया कि काले हंस आस्ट्रेलिया में काफी पाए जाते हैं। वे कतार बांधे हुए झील में तैर रहे थे। अर्नेस्ट उनका शिकार करना चाहता था, लेकिन मैंने रोक दिया। वे इतने प्यारे लग रहे थे कि उन्हें मारने की बात मैं सोच तक न सकता था।

उस नई जगह पर हम लगभग दो सप्ताह रहे। एक पेड़ का तना काटकर हमने शिकार करने काबिल एक नाव भी बना ली थी। बरसात के दिन पास आ गए थे, अतः हम उस नाव को लेकर सुरक्षा-तट पर वापस लौट आए। बरसात से बचाव के लिए अब हमें अपने गुफाघर में ऐसी सारी तैयारियां पूरी कर लेनी थीं कि इधर-उधर भटकना न पड़े। एक दिन शाम को बैठकर हमने आपस में सलाह-मशविरा किया। ऐसे सारे कामों की एक सूची तैयार की, जो हमें गुफाघर में करने थे। इस बात का हमने पूरा ध्यान रखा कि कोई छोटी-से-छोटी बात भी छूटने न पाए। जब सारी बातें तय हो गईं तो हम सब लोगों ने आपस में काम बांट लिए और उन्हें पूरा करने में जुट गए। इस तरह, बिना किसी परेशानी और भागदौड़ के हम लोगों

ने सारे काम निबटा लिए और गुफाघर में आ गए।

गुफाघर में आने के पहले ही दिन मैंने महसूस किया कि अब हम दुनिया के किसी भी सुखी परिवार से टक्कर ले सकते हैं। हमें इस बात का भी संतोष था कि यह सब कुछ हमने अपने साहस, अपने बाजुओं और अपनी बुद्धि के बल पर जुटाया है।

उसी दिन शाम को हम सब लोग बड़े कमरे मे एकत्र हुए। सबके चेहरे प्रसन्नता से चमक रहे थे और होंठ विजय की मुस्कान से खिले हुए थे। मैंने कहा, "आज तो हम लोगों को खुशियां मनानी चाहिए। इस नये महलनुमा मकान में आने की खुशी में कुछ गीत-संगीत होना चाहिए। क्यों जैक ठीक है न?"

मेरे कहने भर की देर थी कि जैक और फ्रांसिस अपनी-अपनी बांसुरी ले आए। उस गुफा घर में बांसुरी की तानें गूंज उठीं। यह देखकर मेरी पत्नी भी चुप बैठी न रह सकी। उसने बांसुरी की तान के साथ अपने सुरीले गले से एक गीत छेड़ दिया। इस तरह काफी देर तक संगीत और गायन का कार्यक्रम चलता रहा।

जब गायन समाप्त हुआ तो मैंने कहा, "इस टापू पर आए आज हमें पूरे दो साल हो रहे हैं। इस बीच हम लगातार मेहनत करते रहे हैं। उसी मेहनत का यह नतीज़ा है कि सुनसान टापू में भी आज हम दुनिया के धनी आदमियों जैसी जिंदगी बिता सकते हैं। इसलिए मेरी इच्छा है कि कल हम लोग एक जलसे का आयोजन करें और शानदार ढंग से अपनी जीत की खुशी मनाएं।"

अगले दिन सुबह की बात है। तोप के एक गोले की आवाज़ सुनकर काफी तड़के ही मेरी आंख खुल गईं। मैं चौंक पड़ा कि शायद कोई और बाहरी आदमी हमारी सुख-शांति में विघ्न डालने यहां—इस टापू में आ पहुंचा है। लेकिन असलियत का पता लगते देर न लगी। यह हमारे बच्चों की ही करतूत थी। वास्तव में उन्होंने तोप की सलामी से नये दिन का स्वागत किया था।

सुबह से ही हम तरह-तरह के कार्यक्रमों में जुट गए। खेल-कूद, निशाने-बाज़ी, तैराकी, संगीत-गायन, चुटकुले आदि के कार्यक्रम चलते रहे और हम खुले दिल से जीवन का आनन्द लूटते रहे।

उस दिन सबसे आखिरी कार्यक्रम पुरस्कार वितरण का था। पुरस्कार वितरण का काम पत्नी के ज़िम्मे सौंपा गया। गुफाघर के बैठक वाले कमरे में अपने हाथों तैयार की हुई दरियां बिछाई गईं, खम्भे काटकर बनाई गई कुर्सियां रखी गईं और रोशनी के लिए मोमबत्तियां जला दी गईं। बच्चे दरी पर ज़मीन में बैठे और मैं व पत्नी कुर्सियों पर। जिस खेल में जो बालक प्रथम आया था। मैं उसका नाम बोलता जाता था और पत्नी उन्हें पुरस्कार देती जाती थी। जब सब बच्चों को पुरस्कार मिल गए तो मैं उठकर खड़ा हुआ और कहा, "बच्चो, तुम लोगों को तो अपनी योग्यता का पुरस्कार मिल गया लेकिन हममें से एक व्यक्ति अभी बाकी है जिसे उसकी बुद्धिमत्ता और साहस का कोई भी पुरस्कार नहीं मिला है। वह है—तुम्हारी मां ! अगर तुम्हारी मां हम सबके साथ इस तरह कंधे से कंधा भिड़ाकर

न चली होती और अपने कर्तव्य का पूरी तरह पालन न किया होता तो शायद हम इतने सफल न हो पाये होते। इसलिए अब मैं उसे पुरस्कार दे रहा हूं।" और मैंने बहुत दिनों से संजोकर रखी हुई एक विलायती सिलाई मशीन पत्नी को भेंट की। पत्नी को पुरस्कार देते समय बच्चों ने एक साथ ताली बजाकर अपनी खुशी प्रकट की और पत्नी ने पुरस्कार लेते समय झुककर मेरे प्रति आदर प्रकट किया।

इसके बाद उस दिन का आयोजन समाप्त हो गया। हम लोगों ने एक साथ बैठकर खाना खाया और सोने की तैयारी करने लगे।

हफ्ते भर बाद बरसात का मौसम आ गया। आसमान काले-काले बादलों से घिर गया। बिजली कौंधी, बादल गरजने शुरू हुए और ज़ोर की बारिश होने लगी। लेकिन इस बार हम बारिश से पूरी तरह सावधान थे और हमने अपनी पूरी तैयारी कर ली थी। पानी लगभग पन्द्रह दिन तक बरसता रहा। बीच-बीच में कभी-कभी रुक भी जाता था, लेकिन आसमान तब भी घिरा रहता था।

हमने यह तय किया था कि बरसात के मौसम में इस बार बाहर नहीं निकलेंगे और घरेलू कामों को निबटा डालेंगे। इसलिए मैंने उन सारे बक्सों को खोल डाला जो हम समुद्र के टूटे हुए जहाज़ से लाए थे। उनमें बहुत-सी ऐसी चीज़ें निकलीं जिनके बारे में हमें पहले से तनिक भी जानकारी नहीं थी और जिनकी हमें बहुत ज़्यादा ज़रूरत थी। उसी सामान में मिट्टी के तेल का एक टिन और एक लालटेन भी निकली। लालटेन को देखकर हमें बड़ी खुशी हुई, क्योंकि मोमबत्तियों से हमारा काम पूरी तरह नहीं चल पाता था। जहाज़ से लाए हुए सामान में किताबों की भी संख्या बहुत अधिक थी। तरह-तरह के विषयों

पर तरह-तरह की किताबें ! विज्ञान, दर्शन, कविता, कहानी और उपन्यास के अतिरिक्त कुछ किताबें ऐसी भी थीं जिनसे हम फ्रेंच, स्पेनिश, जर्मन और लैटिन की जानकारी बढ़ा सकते थे और अंग्रेजी भी सीख सकते थे।

वे सारी किताबें हमने बैठक वाले कमरे में अलमारियों में सजा दीं। दूसरे कामों के साथ-साथ अब हम रोज़ दो घण्टे का समय पढ़ने में भी लगाने लगे।

फ्रेंच और जर्मन हममें से थोड़ी-थोड़ी सबको आती थी और उतनी ही काफी भी थी। अंग्रेजी को हम सबसे ज्यादा महत्त्व देना चाहते थे, क्योंकि हमें उम्मीद थी कि कभी-न-कभी कोई जहाज़ी या कोई जहाज इस टापू की ओर जरूर आएगा। जहाज़ के लोगों में अंग्रेज़ी का चलन खासतौर पर होता है। इसलिए मैं अपने अंग्रेजी ज्ञान को बढ़ाने में लग गया। जैक की रुचि स्पेनिश और इटैलियन भाषाओं में थी, इसलिए वह उन भाषाओं को सीखने लगा। फ्रिट्ज़ को हमने मलय भाषा सीखने के लिए उत्साहित किया, क्योंकि हमारा ऐसा अनुमान था कि हम जिस टापू पर रह रहे हैं, वह मलाया के आस पास हो सकता है। क्या पता, ऐसा ही संयोग आ पड़े कि कभी किसी मलाया-निवासी से ही बातचीत का मौका मिले। इस प्रकार मैं, फ्रिट्ज़ और जैक अपनी-अपनी पसन्द की भाषाओं की जानकारी बढ़ाने और पक्की करने लगे।

अर्नेस्ट की रुचि भाषाओं से बिल्कुल अलग हटकर कविता में थी। इसलिए वह हमारी मदद से फ्रेंच, जर्मनी तथा अंग्रेज़ी काव्य-साहित्य का अध्ययन करने लगा। पत्नी और नन्हें फ्रांसिस

को भी मैंने कुछ भाषाओं की वर्णमाला का अभ्यास कराना शुरू करा दिया। बरसात जब तक रुकी, हम लोगों ने अपने-अपने अध्ययन में काफी प्रगति कर ली थी। मैं अच्छी तरह अंग्रेज़ी बोलने लगा था, जैक भी थोड़ा रुक-रुककर स्पेनिश और इटैलियन बोल लेता था और फ्रिट्ज टूटी-फूटी मलय समझने और बोलने लगा था। सबसे ज़्यादा प्रगति की थी अर्नेस्ट ने। उसने बहुत-सी फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेज़ी कविताएं मुंहजबानी याद कर ली थीं।

पन्द्रह दिन बाद आसमान खुला और बारिश खत्म हुई। तब मुझे ख्याल आया कि अब बाहर निकलकर देखना चाहिए कि घोंसले की क्या हालत है ? सब्ज़ियों की बाड़ी और दूसरे पौधे कैसे हैं ? इसलिए हम लोग तैयार होकर घोंसले की ओर चल दिए। रास्ते में वह तालाब भी पड़ता था, जिसमें हमने बत्तखों के रहने की व्यवस्था की थी। सोचा, उधर से ही उन्हें भी देखते चलेंगे। लेकिन हम लोग मुश्किल से एक फर्लांग ही गए होंगे कि अचानक फ्रिट्ज़ ठिठक गया और चिल्ला पड़ा, "पापा...पापा! अजगर।" मैंने देखा उसका चेहरा भय से पीला पड़ गया था और पैर थरथरा रहे थे।

"क्या हुआ, फ्रिट्ज़ ?" अचानक मेरे मुंह से निकल गया। "वह देखो," फ्रिट्ज ने तालाब के दूसरी ओर इशारा किया।

हमने देखा, हमसे लगभग एक फर्लांग दूर सांप जैसी कोई चीज़ रेंग रही है। सचमुच वह सांप ही था ! और सांप भी ऐसा-वैसा नहीं ! अजगर !! उसका शरीर इतना भारी-भरकम और लम्बा-चौड़ा था कि उसे पहचानने में हमें तनिक भी परेशानी

नहीं हुई। हम बड़ी आसानी से देख रहे थे कि वह अपना शरीर किस तरह सिकोड़ और फुला रहा है। इतने में ही उसने अपने फन को सीधा खड़ा कर दिया। उस समय उसकी ऊंचाई लगभग बीस फुट हो गई थी। मैंने सोचा, यह अच्छा मौका है। इसे मार देना ही अच्छा रहेगा। नहीं तो हम सबको दिन-रात खतरा बना रहेगा। न हम लोग आजादी से घूम-फिर सकेंगे, न हमारे जानवर ही। इसलिए झटपट मैंने अपनी बंदूक कंधे से उतार ली और निशाना साधने लगा। फ्रिट्ज़, अर्नेस्ट और जैक से भी मैंने जल्दी करने को कहा। उन्होंने भी वैसा ही किया और अगले ही क्षण धांय-धांय...चार आवाज़ें हुईं। लेकिन दुर्भाग्य से अजगर हमसे इतनी दूर था कि निशाना ठीक नहीं बैठा। वह चौकन्ना होकर उसी तालाब में रेंगकर जा छुपा, जिसमें हमारी बत्तखें थीं।

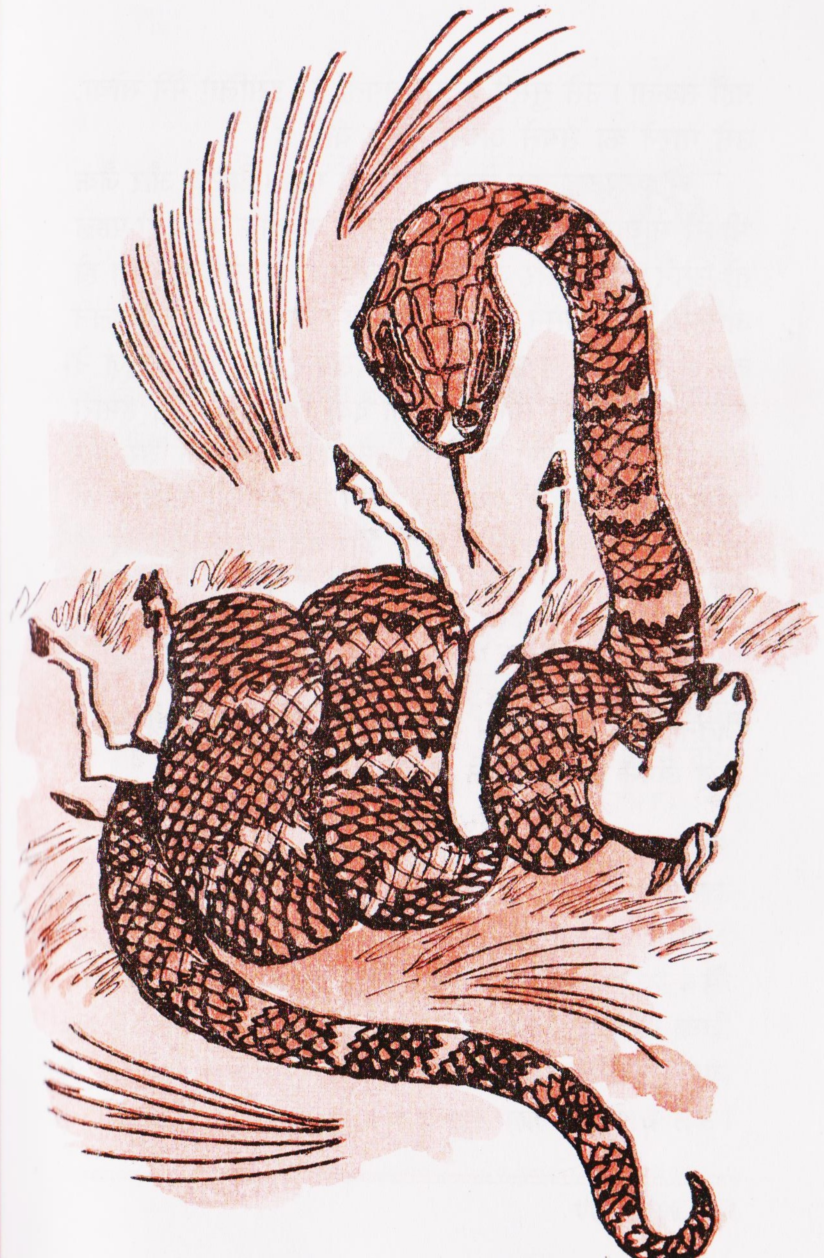
इस घटना से हमारी परेशानी और बढ़ गई। हमें ऐसा लगा जैसे अब हमारी एक भी बत्तख ज़िन्दा नहीं बचेगी। लेकिन हमारे सामने ऐसा कोई भी उपाय नहीं था कि हम बत्तखों को बचा पाते। फिर भी किसी तरह अपने आपको और अपने जानवरों को बचाना था। इसलिए घोंसले पर जाने का इरादा छोड़ हम फिर गुफा में लौट आए और दरवाज़ों को मजबूती से बंद कर लिया। मैंने सबको यह हिदायत दे दी कि न तो दरवाज़ा खोला जाए, न बाहर ही कोई निकले। जानवरों के लिए भी मैंने यही पाबन्दी लगा दी। कभी-कभी बत्तखों की दर्दनाक आवाज़ें ऐसे सुनाई देती थीं, मानो कोई उनका गला घोट रहा हो। हम दिल मसोसकर रह जाते। उन्हें बचाने का

कोई भी तरीका नहीं था।

तीसरे दिन की बात है। एक आवश्यक कार्य से हमें दरवाज़ा खोलना ज़रूरी हो गया। मैंने अपनी पत्नी से यह भी कह दिया कि पूरी सावधानी बरती जाए और काम करके जल्दी से दरवाज़ा बन्द कर दिया जाए। लेकिन जैसे ही दरवाज़ा खोला गया, हमारा एक गधा पलक झपकते ही निकल भागा। जैसे वह दरवाज़ा खुलने की प्रतीक्षा ही कर रहा हो। हमने उसे रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह इतना तेज भागा जैसे कोई कैद से छूटकर भागता है। वह उसी तालाब की ओर भागता चला जा रहा था।

आज जब मुझे वह घटना याद आती है तो मैं सोचता हूं कि शायद उसकी मौत ही इतनी तेज़ी से उसे अपनी ओर खींच रही होगी। जब वह तालाब के बिल्कुल किनारे पहुंच गया तो अजगर ने अपना मुंह पानी से बाहर निकाला। गधे को देखकर वह झटपट बाहर आ गया और उसकी ओर बढ़ा। यह देखकर गधा भी ठिठका और पीछे लौटने को मुड़ा। लेकिन उस भयंकर अजगर ने झपटकर उसे अपनी चपेट में ले लिया और कुछ ही देर में उसकी हड्डी-पसली तोड़कर धर दी। गधे का दम घुट गया। इसके बाद अजगर ने उसे निगल लिया।

अब अजगर और भी मोटा हो गया और सुस्त पड़ने लगा। मैं यह सारी घटना खिड़की में से बैठा देख रहा था। मेरी पत्नी तथा बच्चे भी इधर-उधर से झांकने की कोशिश कर रहे थे। तभी मुझे याद आया कि अपना शिकार निगल लेने के बाद अजगर इतना भारी हो जाता है कि इधर-उधर हिल-डुल तक



नहीं सकता। उसे सुस्ती सताने लगती है। इसलिए मैंने सोचा, उसे मारने का सबसे अच्छा मौका यही है।

मैं झटपट बन्दूक लेकर तैयार हो गया। फ्रिट्ज़ और जैक भी मेरे साथ आए। जब हम अजगर के नज़दीक पहुंचे तो पहले तो उसने अपना सिर उठाने की कोशिश की, लेकिन तुरंत ही असहाय होकर उसने सिर को सिकोड़ लिया। उसे हिलने-डुलने तक में परेशानी हो रही थी। यह देखकर मैंने और फ्रिट्ज़ ने एक साथ निशाना साधकर घोड़ा दबा दिया। जैसे ही हमारी बन्दूकें दगीं, मैंने देखा, हमारे निशाने ठीक अजगर के सिर और आंख पर लगे हैं। दो-एक बार उसने उछलने की कोशिश तो की, लेकिन कोई उपाय न चला और वह मरकर वहीं ढेर हो गया।

इस प्रकार हमें अजगर पर विजय तो मिल गई लेकिन इसके लिए हमें अपने एक स्वामिभक्त जानवर को खोना पड़ा। जितनी खुशी हमें अजगर को मारने की थी, उससे कहीं ज्यादा दुःख अपने गधे के मरने का था।



9

उस टापू पर रहते हुए हमारे दिन-महीने और साल बीतते रहे। जैसे-जैसे दिन बीतते जाते थे। हमें सृष्टि की किसी न किसी नई रचना की जानकारी होती जाती थी। इस प्रकार गाय, भैंस, बैल, बकरी और भेड़ जैसे घरेलू जानवरों से लेकर खरगोश, हिरन जैसे जानवर तक हमारे साथी बन गए। हमारी चिड़ियों की दुनिया भी कम अद्‌भूत नहीं थी। जहां शुरू-शुरू में हमारे पास केवल मुर्गी, कबूतर और बत्तखें थीं, वहां अब हमने सारस और काले हंस भी पाल लिए थे। अब हमारे पास लम्बे-चौड़े खेत भी थे और हम अनाज भी पैदा करने लगे थे। उस टापू पर आए हमें अब पूरे दस साल हो चुके थे।

हमारे बच्चे भी अब काफी बड़े हो गए थे। फ्रिट्ज़ की उम्र पच्चीस वर्ष की थी और अर्नेस्ट तेईस साल का था। जैक की उम्र बाइस साल थी और तब का नन्हा फ्रांसिस भी अब सत्रह वर्ष का हो गया था। अब हमें किसी भी प्रकार की कमी नहीं थी। हम अपनी उस दुनिया में पूरी तरह सुखी थे। बच्चों पर भी हमने अब अनुशासन काफी ढीला कर दिया था। अब वे इतने बड़े हो गए थे कि अपना बुरा-भला खुद सोच सकें।

वे तरह-तरह के खेल-खेलते। वहां के पशुओं से भी वे मनोरंजन करते। घुड़दौड़ की जगह भैंसे की दौड़ उन्हें ज़्यादा अच्छी लगती। कभी-कभी वे 'दि एलिजाबेथ' से छोटी-मोटी समुद्री यात्रायें भी करते रहते थे और दो-तीन रातें समुद्र में ही बिता देते थे। हां, अगर हमारे मन में कोई कसक थी तो बस इतनी कि अपने परिवार के लोगों के अलावा हमने पिछले दस वर्षों में किसी दूसरे आदमी का चेहरा नहीं देखा था।

एक दिन की बात है। सबेरा भी नहीं होने पाया था कि फ्रिट्ज़ ने नाव खोली और कहीं चल दिया। उसने अपने पीछे कोई सूचना भी नहीं छोड़ी कि कहां जा रहा है। धीरे-धीरे चार दिन बीत गए और वह वापस नहीं आया। अगर वह अकेला न गया होता तो शायद अधिक चिन्ता न होती, लेकिन चूंकि उसके साथ और कोई भी न था इसलिए हमारे मन में तरह-तरह की शंकाएं उठने लगीं। तब मैंने सुरक्षातट पर अपना झण्डा फहराकर एक बार तोप दागी। समुद्री सेनाओं और जहाज़ों में, खोए हुए आदमी का पता लगाने के लिए यही तरीका प्रयोग में लाया जाता है। कुछ देर बाद समुद्र में काफी दूर पर एक काला धब्बा-सा दिखाई दिया। उस धब्बे को देखकर सबको बड़ी आशा बंधी और हम लोग उसके किनारे आने की राह देखने लगे। जब वह धब्बा काफी स्पष्ट हो गया और लोग उसे साफ-साफ पहचान सके तब कहीं जाकर चिंता मिट पाई। हमारा अनुमान सही था। वह फ्रिट्ज की ही नाव थी। वह हमारे संकेत को देखकर चल पड़ा था।

जब फ्रिट्ज़ किनारे आ गया तो मैंने देखा उसकी नाव



असंख्य सीप और मोतियों से लदी हुई थी। उसने बताया कि ये सब उसने पड़ोस के एक टापू पर खोजे हैं। जैक, अर्नेस्ट और फ्रांसिस आश्चर्य से उन सीप और मोतियों को बड़ी देर तक निहारते रहे। मैं भी मन-ही-मन सोचने लगा कि काश, यह सब मैं योरोप के देशों में ले जा पाता, जहां इनकी कीमत हज़ारों और लाखों शिलिंग-पौंडों में आंकी जाती। लेकिन मेरी पत्नी एलिज़ाबेथ का ध्यान इन सब चीज़ों की ओर नहीं था। उसके दिल में सिर्फ ममता उमड़ रही थी और वह बार-बार फ्रिट्ज के मस्तक को चूमती हुई ईश्वर को धन्यवाद दे रही थी कि उसका प्यारा बच्चा सही-सलामत लौट आया था। एलिजाबेथ की ममता को देखकर मेरा भी मन फ्रिट्ज के प्रति अपार स्नेह और वात्सल्य से भर उठा।

एकान्त में जब फ्रिट्ज़ से मेरी बातें हुई तो उसने बताया, ''पापा, उस टापू पर मोतियों का बहुत बड़ा खज़ाना है, इतना बड़ा कि अगर हम वहां से यह सब चीज़ें किसी तरह योरोप ले जा सकें तो कुछ ही दिनों में हम मालामाल हो सकते हैं। इसी बीच एक ऐसी चीज़ का भी पता चला है जो इन सबसे बहुत अधिक मूल्यवान है। जब मैं मोतियों के लिए सीप खोलता था तो उनके अन्दर के कीड़े को लेने और झपटने के लिए झुंड की झुंड समुद्री चिड़ियां मेरे चारों ओर जमा हो जातीं। तभी एकाएक मैंने देखा कि एक चिड़ियां के पैर में एक कपड़े का टुकड़ा बंधा हुआ है। मेरे मन में एक कौतूहल-सा जाग उठा। साथ ही यह भय भी था कि वह डरकर कहीं भाग न जाए। इसलिए मैंने बड़ी सावधानी के साथ उसे लालच देने की कोशिश

की और पास बुलाना चाहा। इस काम में मुझे अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ा। वह चिड़िया मेरे पास आ गई। मैंने गोश्त का एक काफी बड़ा टुकड़ा उसके आगे डाल दिया। जब वह उसे खाने में तल्लीन हो गई तो मैंने धीरे से उसके पंखों में बंधा कपड़ा खोल लिया। कपड़े पर लिखा था, 'मुझे बचाओ ! मेरा जहाज़ टूट गया है। साथ के बहुत-से लोग डूब गए हैं। कुछ लोग जीवन-नौका में बैठकर बच भी गए हैं। लेकिन मैं न तो डूबा ही, न जीवन-नौका में ही चढ़ पाया। मैं यहीं छूट गया हूं, यहां—इस धुएं वाली चट्टान पर।' पापा, आप सोच सकते हैं कि यह सब पढ़कर उस समय मुझे कितना आश्चर्य और कितनी खुशी हुई होगी। मैंने देखा, चिड़िया के आगे का गोश्त खत्म ही होने वाला था। मैंने झटपट उसी कपड़े के दूसरी और दो वाक्य लिखे—'हिम्मत मत हारना ! हम आ रहे हैं।' और उसके पैर में बांध दिया। जब मेरा यह काम पूरा हो गया तो मैंने बड़ी सावधानी से उसे आसमान में उड़ा दिया। उम्मीद है, मेरा संदेश अब तक उस आदमी को मिल गया होगा। चाहता तो मैं यह था कि उसी समय उसकी खोज में चल पड़ता, लेकिन मैंने सोचा कि पहले आपको इसकी सूचना दे देनी चाहिए।''

यह कहानी सुनकर मेरे मन में भी एक कौतूहल जाग उठा। मैंने फ्रिट्ज़ की बुद्धि की बड़ी तारीफ़ की और अगले ही दिन चल पड़ने को कह दिया। साथ ही हम दोनों ने यह भी तय किया कि अभी इस सारी घटना को गुप्त ही रखना चाहिए, क्योंकि पता नहीं वह चिड़िया उस जगह से कब उड़ी है और वह नाविक अभी तक जीवित भी है या नहीं। इसलिए बिना

पूरी बात का पता चले लोगों में उत्सुकता जगाना ठीक नहीं रहेगा। इसलिए यह योजना बनी कि दूसरे दिन तड़के ही फ्रिट्ज़ अपनी नाव लेकर चुपचाप धुएं वाली चट्टान की खोज करने चल देगा।

इस बार फ्रिट्ज को गए पांच दिन हो चुके थे। इस बीच उसकी कोई सूचना नहीं मिल सकी थी। पांच दिन तक तो किसी तरह पत्नी और बच्चों को मैं धीरज बंधाता रहा। लेकिन पांच दिन बाद खुद मेरा ही धीरज टूटने लगा। रह-रह कर मेरा ध्यान समुद्री यात्रा के खतरों की ओर जाता। उधर पत्नी की बेचैनी भी नहीं देखी जाती थी। मां की ममता उसके अन्दर इस तरह उमड़ रही थी कि मेरी आंखों की नींद तक गायब हो गई। अन्त में हमने फ्रिट्ज की खोज करने का फैसला किया।

दूसरे दिन सुबह हम अपना जहाज़ 'एलिज़ाबेथ' लेकर फ्रिट्ज़ की खोज में निकल पड़े। वैसे तो पत्नी को समुद्री ज़िन्दगी से चिढ़ थी लेकिन फ्रिट्ज के प्रति ममता के कारण वह भी अपने को न रोक सकी। इस तरह एक लम्बे अरसे के बाद एक बार फिर हमारा पूरा परिवार समुद्र की लहरों पर खेलने लगा।

हम कुछ ही दूर गए होंगे कि अर्नेस्ट भर्राई हुई आवाज में बोला, "पापा, वह देखो ! लगता है कोई समुद्री लुटेरा है। कितना भयानक लग रहा है उसका चेहरा !" हम सब लोग चौकन्ने होकर देखने लगे। कुछ दूर पर एक नाव दिखाई दी। उस पर जो आदमी था उसके सिर पर चिड़ियों के पंखों का मुकुट लगा हुआ था और शरीर के सभी अंगों पर बड़ी

विचित्र-विचित्र रंगीन आकृतियां बनी थीं। जैक का अंदाज़ भी यही था कि यह कोई समुद्री लुटेरा है ! हो सकता है, इसके और साथी भी पीछे आ रहे हों। मैंने सोचा, ऐसे मौके पर बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए। हो सकता है सफलता मिल जाए। इसलिए मैंने मलय भाषा में आवाज दी। आवाज़ सुनते ही नाव करीब आने लगी। तब मैंने फिर उसी भाषा में पूछा, "क्या तुम्हारा नाम फ्रिट्ज़ है? क्या तुम धुएं वाली चट्टान का पता लगाने गए थे ?" धुएं वाली चट्टान का नाम सुनकर जैक और अर्नेस्ट थोड़ा-सा चौंके और मेरे चेहरे की ओर देखने लगे। इतने में ही वह नाव हमारे जहाज़ से आ लगी और वह भयानक-सा लगने वाला आदमी नाव पर से उछलकर जहाज़ पर आ गया। जैसे ही हम लोगों ने फ्रिट्ज़ को पहचाना बच्चे मारे खुशी के उछल-से पड़े। लेकिन मेरे मुंह से केवल एक ही सवाल निकला, "तुम्हें अपनी खोज में सफलता मिली ?"

फ्रिट्ज ने मुंह से तो कोई उत्तर नहीं दिया लेकिन उसकी आंखों की चमक से साफ पता चलता था कि वह सफलता प्राप्त करके लौटा है।

फ्रिट्ज़ ने बताया कुछ भी नहीं। जितना जो कुछ हम जान पाए वह अनुमान के ही आधार पर था। वह फिर अपनी नाव पर वापस लौट गया और हमें अपने पीछे-पीछे आने को कहा। फ्रिट्ज़ की नाव का पीछा करते हुए हमारा जहाज़ लगभग तीन-चार घंटे तक चलता रहा। इसके बाद हमें एक ऐसा टापू दिखाई पड़ा जहां बहुत-से हरे-भरे पेड़ थे। बीचों-बीच एक पहाड़ी थी जिसके मुंह से धुएं की एक पतली लकीर निकल रही थी।

फ्रिट्ज़ ने अपनी नाव उसी टापू के तट पर रोक दी। हमने भी अपने जहाज़ का लंगर डाल दिया। जहाज़ पर मेरे अलावा किसी को भी यह नहीं मालूम था कि यह कौन-सी जगह है और हम लोग यहां क्यों आए हैं।

टापू पर पहुंचकर फ्रिट्ज पेड़ों के बीच से होता हुआ आगे बढ़ा। उसके पीछे-पीछे हम लोग चल रहे थे। पेड़ों की आड़ में हमें एक झोपड़ी और उसके बाहर एक छोटा-सा चूल्हा दिखाई दिया। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उस पूरे प्रदेश में पिछले दस साल के अन्दर अपनी बनाई हुई चीज़ों के अलावा मनुष्य के हाथों की बनी कोई और चीज़ इससे पहले हमने नहीं देखी थी। फ्रिट्ज़ उस झोपड़ी के पास गया और एक आवाज़ दी। आवाज़ के साथ ही एक खूबसूरत युवक नाविक एक पेड़ पर से नीचे उतरा और डरी हुई नज़रों से हमारी ओर देखने लगा। हम लोग इतने विस्मित और खुश थे कि एक भी शब्द मेरे मुंह से नहीं निकल पाया। काफी देर तक हम लोग चुपचाप एक-दूसरे की ओर देखते रहे। अंत में फ्रिट्ज़ ने ही शुरुआत की। वह बड़े प्यार के साथ उस युवक का हाथ पकड़कर हमारे पास ले आया और परिचय कराते हुए कहा, "मिलिए, यह मेरे पिताजी हैं, यह मेरी मां है और यह तीनों मेरे छोटे भाई हैं।" फिर उसने उस युवक का परिचय हम सबको दिया, "पिताजी, इनसे मिलिए, यह हैं एडवर्ड मॉन्ट्रोस—हमारे नये दोस्त, भाई, नये हमसफर! यह इंगलैंड के रहने वाले हैं और इनका जहाज़ भी इसी तट पर चकनाचूर हुआ था।"

परिचय के बाद तो हम सबकी खुशी का ठिकाना न रहा।

मैंने बड़ी आत्मीयता के साथ बढ़कर उससे हाथ मिलाया। लेकिन उससे हाथ मिलाते ही एकाएक मुझे लगा कि यह हाथ किसी युवक का नहीं, बल्कि युवती का है। फिर भी उस समय इस संबंध में कुछ भी पूछना मुझे ठीक न जंचा। हम सब लोग उसके प्रति बड़ा अपनापन प्रकट करते रहे और उसे विश्वास दिलाते रहे कि अब उसे तनिक भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। मैंने कहा, "अब तुम्हारे मन में अगर तनिक भी संकोच हो तो उसे बाहर निकाल दो। यह समझ लो कि मैं तुम्हारा पिता हूं, मेरी पत्नी मां है और मेरे यह चारों बच्चे तुम्हारे भाई हैं!" मेरी बात सुनकर उस युवक का मोह आंखों के रास्ते बह चला और वह बड़ी मासूमियत के साथ मेरी पत्नी के वक्ष से चिपककर सुबकने लगा।

कुछ देर बाद फ्रिट्ज़ ने मुझे अलग ले जाकर कहा, "पापा, अभी तक सही बात मैंने आप लोगों में से किसी को नहीं बताई है! यह बेचारी एक लड़की है। तीन साल पहले इसका जहाज़ इसी समुद्र में चकनाचूर हो गया था और तब से यह यहां बिल्कुल अकेली रह रही है। इसे डर था कि शायद मेरे भाई एक लड़की को अपने साथ रखना पसन्द न करें। इसलिए इसने मुझसे यह प्रार्थना की थी कि शुरू में मैं इस रहस्य को न खोलू।" पूरी बात सुनकर मैंने कहा, "लेकिन मैंने तो उससे हाथ मिलाते समय ही यह अनुमान लगा लिया था कि यह लड़की है ! मैं समझता हूं कि इस बात को छिपाने से कोई फायदा नहीं होगा, क्योंकि जैक, अर्नेस्ट और फ्रांसिस के बारे में तो तुम खुद जानते हो।"

शाम के भोजन के बाद जब हम आग के चारों ओर बैठे ताप रहे थे तो फ्रिट्ज ने अपनी कहानी बतानी शुरू की कि सुरक्षातट के तंबूघर से धुएं की चट्टान की खोज में निकलने के बाद उस पर क्या बीती। उसने बताया, ''तंबूघर से चलने के बाद दो दिनों तक तो मैं इधर-उधर ही भटकता रहा। इसके बाद मैं एक ऐसे जंगली और भयानक तट के पास से गुज़रा जिसकी हमने अब तक कल्पना ही नहीं की थी। रात गुज़ारने के लिए जब मैं एक जगह रुका तो मन में आया कि घर वापस लौट चलूं। मैं यह सोच ही रहा था कि झाड़ियों के पीछे से सरसराहट की आवाज़ आई! मैं चौकन्ना हो उठा। मैंने देखा कि झाड़ी को चीरता-फाड़ता एक भयानक शेर चला आ रहा है। भय के मारे मेरा चेहरा पीला पड़ गया। जब तक मैं अपनी बंदूक संभालूं उसने एक छलांग भरने की कोशिश की। मैं प्रभु को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं कि उस समय मेरी पालतू चील मेरे साथ थी। उसने मरते दम तक मेरा साथ दिया। हुआ यह कि बिना तनिक भी डरे वह उड़ी और ठीक शेर की आंखों पर अपनी चोंच मार दी। जैसे ही वह अंधा होकर लड़खड़ाया मैंने झटपट अपनी बंदूक का घोड़ा दबा दिया। शेर तो मर गया, लेकिन मुझे अफसोस है कि हमारी प्यारी चील उससे पहले ही शेर के जबड़ों के नीचे आ चुकी थी। जितनी खुशी मुझे शेर को मारने की नहीं हुई उससे अधिक अफसोस उस चील के मरने का होता रहा।

''अगले दिन सुबह तक जाने कैसे मेरा खोया हुआ साहस फिर लौट आया। बजाय पीछे वापस लौटने के मैं फिर आगे

की ओर चल पड़ा। वहां से मैं अधिक-से-अधिक एक मील आगे गया होऊंगा कि मुझे एक टापू दिखाई दिया, जिसके बीचों-बीच की पहाड़ी से धुआं निकल रहा था। मेरा मन भीतर ही भीतर खुशी से उछलने-सा लगा। मैंने सोचा, क्या यही वह धुएं वाली पहाड़ी है।

''टापू के तट पर पहुंचकर मैंने अपनी नाव किनारे से बांध दी और उस पहाड़ी की तरफ बढ़ने लगा। अचानक उसी समय मैंने देखा कि पचास गज़ की दूरी पर एक मानव आकृति खड़ी है और मेरी ओर देख रही है। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। मैं अपने को काबू में न रख सका। और टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में कहा, 'मुझे तुम्हारा संदेशा मिल गया था। अब मैं तुम्हारी सहायता के लिए आ गया हूं।'...और वह मानव आकृति और कोई नहीं मर्दाने वेष में अपने को छिपाए यह जेनी ही थी! ...यह जेनी, जिसे अब हमने अपने परिवार का एक अंग बना लिया है।''

''जेनी ? जेनी ? जेनी ? तो क्या अभी तक तुम हमें धोखा दे रहे थे ?'' जैक, अर्नेस्ट और फ्रांसिस विस्मित से हो उठे, ''क्या जिसे हम अपना नया भाई समझ रहे थे, वह हमारी नई बहिन है ?''

''हां, यह हमारी नई बहिन जेनी है! लेकिन ध्यान रखो, उसे अधिक परेशान मत करना, क्योंकि हमारी बहिन पिछले तीन साल से बिल्कुल अकेली और बहुत परेशान रही है। तुम सब खुद सोच सकते हो कि उसकी हालत कैसी होगी !''

सभी ने यह बात मान ली।



10

फ्रिट्ज़ ने जेनी के बारे में जो हिदायत दी थी उसका बड़ा मज़ेदार असर हुआ। जैक, अर्नेस्ट और फ्रांसिस के मुंह पर मानो ताला लग गया। लेकिन उनकी वही जिज्ञासा बजाय मुंह के आंखों के रास्ते से प्रकट होती थी। वे बेचारे फ्रिट्ज के प्रति आदर के कारण बोल तो कुछ न पाते, लेकिन टकटकी लगाए जेनी के चेहरे को ज़रूर देखते रहते। अन्त में जेनी ने ही उनकी मदद की, और सबकी झिझक मिटा दी।

जेनी के व्यवहार से बच्चों के चेहरे की खोई हुई प्रसन्नता फिर लौट आई जहां कुछ देर पहले तक वह अजनबीपन महसूस कर रहे थे, वहीं अब वे घुलने-मिलने की कोशिश करने लगे। यह देखकर खुद मैंने ही जेनी को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वह अपनी कहानी सुनाए। मेरे आग्रह को जेनी टाल न सकी। अपनी जो कहानी उसने सुनाई वह इस प्रकार थी :

"मेरा जन्म एशिया महाद्वीप के देश भारत में हुआ था। मेरे पिता सर एडवर्ड मॉनट्रोस अंग्रेज़ थे और भारत में सेना के एक ऊंचे पद पर थे। मेरी मां भी अंग्रेज़ महिला थीं। लेकिन

उनकी मृत्यु उनके विवाह के सिर्फ तीन साल बाद मेरे जन्म के समय ही हो गई थी। मां की मृत्यु के कारण पिता का सारा प्यार मेरे ऊपर ही निछावर हो गया। एक क्षण के लिए भी मां की कमी मुझे महसूस नहीं हुई। पिता ने बचपन से ही मुझे लड़के की तरह रखा और पाला-पोसा। लड़कों जैसे कपड़े, लड़कों जैसी आदतें। सोलह वर्ष की उम्र तक आते-आते निशानेबाज़ी, तैराकी और घुड़सवारी में कुशल हो गई। आज मैं सोचती हूं कि अगर मैंने यह चीज़ें न सीखी होतीं तो अब तक मैं मर चुकी होती। कुछ दिन बाद इंग्लैंड से मेरे पिता को आदेश मिला कि वे अपनी टुकड़ी के साथ इंग्लैंड वापस आ जाएं। लेकिन यह हिदायत भी थी कि उस जहाज़ पर वे अपनी लड़की को, यानी मुझे, नहीं ले जा सकते। तब मेरे पिता ने एक दूसरे जहाज़ पर अपने एक दोस्त के साथ मेरी यात्रा का प्रबन्ध कर दिया। दुर्भाग्य की बात कि जिस जहाज़ से मैं इंग्लैंड जा रही थी, रास्ते में वह एक तूफान की चपेट में आ गया। जहाज़ को खतरे में पड़ा देख लोगों ने जीवन-नौकाओं का सहारा लिया। लेकिन दुर्भाग्य ने मेरा साथ तब भी नहीं छोड़ा। मैं जिस जीवन नौका पर थी वह भी टुकड़े-टुकड़े हो गई। उस पर जितने भी लोग थे उनमें से केवल मैं जीवित बच पाई, बाकी सब लोग सदा के लिए समुद्र के अथाह जल में खो गए।

"जब मुझे होश आया तो मैंने अपने आपको इसी तट पर पाया। कई दिनों तक मैं उस पूरे टापू पर भूख और प्यास से तड़पती भटकती रही। अंत में जाने कैसे मेरे अन्दर हिम्मत

आ गई और आज तक मैं अपने आपको किसी तरह ज़िन्दा रख सकी।''

जेनी ने जब अपनी कहानी खत्म की तो उसके चेहरे से ऐसा लग रहा था, जैसे उसमें अब मुसीबतें सहने की ताकत नहीं रह गई है। मैंने उसे धीरज बंधाया और कहा, ''अब तुम्हें कोई फिक्र नहीं करनी चाहिए। हम लोगों ने अब तुम्हें मुसीबत से बाहर निकाल लिया है। जब तुम मेरे यहां चलोगी तो तुम्हें अपने-आप मालूम हो जाएगा कि तुम्हारे लिए हम लोगों ने वहां कितनी सुविधाएं जुटा रखी हैं।''

अगले दिन, जेनी को साथ लेकर हम लोग अपने द्वीप की ओर लौट पड़े।

जेनी को साथ लाने के कारण कई दिन तक हम लोगों के चारों ओर उत्सव और त्यौहार जैसा वातावरण रहा। घोंसला, बन विहार, सब्ज़ियों की बाड़ी, फलों का बगीचा, यानी उस टापू की सभी चीज़ें हम लोग घूम-घूमकर जेनी को दिखाते रहे। सुबह होती और शाम हो जाती, लेकिन पता ही नहीं चल पाता कि दिन कब और कैसे चुपके से सरक गया।

जेनी के आ जाने से सभी को बेहद खुशी थी। स्वयं जेनी की खुशी का कारण यह था कि वह उस धुएं वाले टापू के दमघोटू वातावरण से मुक्त हो चुकी थी। उसे अब माता-पिता और भाई की निकटता का आभास मिल रहा था। इधर हम सब की खुशी का कारण यह था कि लगातार दस वर्षों तक एक-सी हालत में रहने के बाद हमें एक नया चेहरा देखने को मिला था, जिसके अलग-अलग रूप थे। वह हमारे बीच पुत्री

बनकर भी आई थी और बहन-बनकर भी। इसके अलावा जो सबसे बड़ी बात थी वह यह कि हमें किसी की मदद करने का मौका मिला था।

धीरे-धीरे जेनी हमारे परिवार का एक अंग बन गई। सब्ज़ियों की बाड़ी, फलों के बगीचे और खेतीबाड़ी का काम वह हम लोगों से सीखने लगी। घास तथा टहनियों से टोकरियां बनाने का काम उसने मेरी पत्नी को सिखाया।

इस घटना के काफी दिन बाद की बात है। बरसात बीत चुकी थी। हम लोग अपने कामों के अधूरे सिलसिले को फिर से शुरू करने की तैयारी कर रहे थे। एक दिन फ्रिट्ज़ और जैक ने जांच करने के विचार से तोपों पर दो गोले दागे। आगे जो कुछ हुआ उससे तो आश्चर्य की सीमा न रही ! हुआ यह कि हमारी तोपों की आवाज़ के जवाब में काफी दूर से तीन आवाज़ें और सुनाई दीं। वे दोनों आश्चर्यचकित से दौड़े हुए मेरे पास आए और उस असाधारण घटना की सूचना मुझे दी। मुझे भी विश्वास नहीं हुआ। मैंने सोचा, हो सकता है, अपनी ही तोपों की आवाज़ों की गूंज हमें सुनाई दी हो! लेकिन उन्हें पूरा विश्वास था कि किसी ने हमारी तोपों के जवाब में तोपें दागी हैं।

घटना की जांच के लिए मैं भी उनके साथ तट पर गया और एक बार फिर तोप दागी गई। इस बार हमें दूर से तोपों की दो जवाबी आवाज़ें सुनाई दीं। अब संदेह की कोई गुंजाइश नहीं रह गई थी। हमें लगा कि हमारे आसपास ही समुद्र में कोई दूसरा जहाज़ भी लंगर डाले हुए है।

उस समय हम कितने उत्साहित थे, इसका वर्णन करना कठिन है। जेनी का अनुमान था कि हो सकता है उसका पिता उसकी खोज में निकला हो और उसे ढूंढ़ता हुआ इधर ही आ पहुंचा हो। मेरे बच्चे खुशी से पागल हो उठे। लेकिन मैंने हिदायत दी कि हमें जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। पहले अच्छी तरह पता लगा लेना चाहिए कि जहाज़ कहां से आया है और किसका है, तभी कोई कदम उठाना चाहिए।

दूसरे दिन सुबह मैंने जेनी, एलिज़ाबेथ, जैक, अर्नेस्ट और फ्रांसिस को गुफाघर से घोंसले पर भेज दिया। फिर मैं फ्रिट्ज़ के साथ नाव लेकर जवाबी तोपों के रहस्य का पता लगाने निकल पड़ा।



हम अपनी नाव को उसी दिशा में ले गए जिधर से जवाबी तोपें दागी गई थीं। दोपहर ढले तक हम नाव खेते रहे। हमने लगभग सात मील का समुद्री सफर तय कर लिया। उसी समय अचानक मैंने देखा कि लगभग सौ गज़ की दूरी पर एक जहाज़ लंगर डाले हुए हैं। वह जहाज़ बड़ा ही शानदार और किसी शक्तिशाली देश का प्रतीत होता था।

फ्रिट्ज़ चाहता था कि वहीं से समुद्र में गोता लगा जाए और आश्चर्यजनक ढंग से उस जहाज़ के लोगों के सामने प्रकट

हो। लेकिन मेरी तब भी यही इच्छा थी कि उनके पास जाने से पहले जितनी अधिक-से-अधिक बातें मालूम हो जाएं उतना ही अच्छा होगा। इसी विचार से हम थोड़ा आगे और बढ़े। अब उस जहाज़ की और उस तट पर की सभी चीज़ें साफ-साफ दिखाई देने लगी थीं। तट पर दो तंबू लगे थे। पास ही कुछ लोग खाना बना रहे थे। जहाज़ पर रखवाली करने वाले दो नाविकों के अलावा और कोई न था। जब उन नाविकों ने थोड़े ही फासले पर हमारी नाव और हमें देखा तो आवाज देकर अपने एक अफसर को बुलाया। वह भी जहाज़ पर आ गया। उनकी वेशभूषा, कद और चेहरे की बनाट से मुझे विश्वास हो गया कि ये इंग्लैंड से आए हैं और अंग्रेज़ हैं। इसलिए पहले तो हमने ऊंची आवाज़ में अंग्रेज़ी का एक गीत गाया। उसके बाद अंग्रेज़ी में एक आवाज़ दी—''अंग्रेज़ दोस्तो, हम आ गए हैं, दोस्ती का हाथ बढ़ाने !''—लेकिन उन्होंने कोई उत्तर न दिया। मैंने अंदाज़ लगाया कि शायद मेरे पहनावे और छोटी नाव को देखकर वे यह समझे हैं कि हम लोग यहीं आसपास के टापुओं पर बसने वाले छोटे-मोटे सौदागर होंगे। इसलिए मैंने फ्रिट्ज पर अपनी शंका प्रकट करते हुए कहा, ''मैं समझता हूं कि हम लोगों को अपनी अच्छी पोशाकों में और नाव की बजाय जहाज़ पर आना चाहिए था। तभी हमारा प्रभाव इन पर पड़ेगा।'' फ्रिट्ज़ भी राजी हो गया और हम अपने गुफाघर की ओर वापस लौट पड़े।

दूसरे दिन हम लोगों ने पूरी तैयारी की। अपने 'एलिज़ाबेथ' जहाज़ को तैयार किया। उस पर तोपें और बंदूकें लादीं और

इंग्लैंड का राष्ट्रीय झंडा फहराया। इसके बाद परिवार के हम सब लोग अपनी शानदार पोशाकों में उस पर बैठकर चल दिए।

इस बार जैसे ही हम उस अंग्रेज़ी जहाज़ के पास पहुंचे, हमें देखने के लिए वहां के सारे लोग अपने जहाज़ की डेक पर इकट्ठे हो गए। उनके चेहरे से ऐसा लगता था जैसे उन्हें बड़ा आश्चर्य हो रहा हो। हमने अपने जहाज़ से ग्यारह बार बंदूकें दागकर उन्हें सलामी दी। उत्तर में उन्होंने इक्कीस बंदूकें दागीं। उसके बाद मैं अपने जहाज़ से उनके जहाज़ पर गया और उनके कप्तान से हाथ मिलाया। उसने भी बड़ी प्रसन्नता के साथ हमारा स्वागत किया।

कप्तान का नाम था मि. लिटिलटन। काफी देर तक हम लोग आपस में बातें करते रहे और अपनी कहानियां सुनाते रहे। कप्तान लिटिलटन की बातों से मुझे पता चला कि जेनी का अंदाज़ गलत नहीं था। हालांकि उसकी खोज में उसके पिता नहीं आए थे, लेकिन कप्तान लिटिलटन को यह आदेश अवश्य दिया गया था कि वह पूरी कोशिश के साथ जेनी का पता लगाए। कप्तान ने बताया कि 'जब मैंने तोपों की आवाज़ें सुनी तो तय किया कि खोज करने के बजाय हमें यहीं रुककर प्रतीक्षा करनी चाहिए कि हमारे अलावा और कौन यहां इस टापू पर है। वैसे मेरा अनुमान केवल यही था कि किसी का जहाज़ यहीं कहीं आसपास ध्वस्त हुआ होगा और वह आस-पड़ोस से गुज़रने वाले जहाज़ों की मदद पाने के लिए तोपें दाग रहा होगा। लेकिन देखता यह हूं कि आपने तो यहां बड़ा पुख्ता इंतज़ाम कर रखा है।''

उसके बाद कप्तान लिटिलटन से हमने अपने यहां चलने का आग्रह किया। वे आसानी से ही राजी हो गए। उनके साथ इंजीनियर मि. वॉल्स्टन और उनकी पत्नी तथा पुत्री भी मेरे जहाज़ एलिज़ाबेथ पर आ गए।

उस दिन शाम को अपने अतिथियों के सम्मान में हमने गुफाघर में बड़ा भारी जलसा किया। हमारी तैयार की हुई सभी चीज़ों को देखकर वे बड़े खुश हुए और हमारे साहस व धैर्य की बार-बार प्रशंसा करते रहे। मेरे विशेष आग्रह पर उन्होंने हमारे परिवार के साथ एक रात भी बिताई।

दूसरे दिन सुबह नाश्ता करते समय मि. वॉल्स्टन ने बातचीत के दौरान कहा, ''आपसे मिलकर मुझे कितनी खुशी हुई, मैं इसका बयान नहीं कर सकता। जब कभी मैं दुनिया की हलचल और भागदौड़ की ज़िंदगी से मुक्ति लेने की बात सोचता था तो लगता था कि यह सब सपने के समान है। लेकिन यहां तो मैंने देखा कि जो मेरे लिए सपना था, वह आपके लिए सचाई है। मैं इंग्लैंड से अपने लिए किसी ऐसी ही शांत और एकांत जगह की खोज में चला था। क्या आप अपने ही निकट थोड़ी जगह हमें भी रहने को देंगे?''

यह सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई। मैंने कहा, ''इससे अधिक खुशी की बात भला मेरे लिए और क्या होगी ! मेरा तो इसमें फायदा ही है। मेरी पत्नी को एक सहेली, मुझे एक दोस्त और मेरे बच्चों का एक बहन और मिल जाएगी! अगर आप रुकना चाहें तो अपनी जायदाद का आधा हिस्सा मैं आपको दे सकता हूं।''

वॉल्स्टन के साथ हुई बातचीत के बाद जो विचार मेरे मन में उठे वे बड़े भावनापूर्ण और मोह पैदा करने वाले थे। बात यह थी कि मेरी और मेरी पत्नी की इच्छा तो यूरोप लौटने की तनिक भी नहीं थी। लेकिन हम लोग यह भी नहीं चाहते थे कि हमारे कारण बच्चों को भी अपनी सारी ज़िन्दगी इस टापू पर ही बितानी पड़े। इसलिए मैंने उन्हें अपने पास बुलाया और यूरोप के बारे में सारी बातें बताने के बाद पूछा कि क्या वे कप्तान लिटिलटन के साथ वहां जाना चाहते हैं या सारी ज़िन्दगी यहीं रहने में उन्हें संतोष है? मैंने उनसे कहा कि ऐसा मौका फिर कभी आएगा या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता।

जैक और अर्नेस्ट ने हम लोगों के साथ ही रहने की इच्छा ज़ाहिर की। शायद अर्नेस्ट को दुनिया की तड़क-भड़क से अधिक लगाव नहीं था। इसीलिए वह मेरे साथ रहकर पढ़ते-लिखते हुए अपने को एक विद्वान आदमी बनाना चाहता था। जैक के रुकने का कारण यह था कि उसे शिकार करना बहुत पसंद था। किंतु फ्रिट्ज़ कुछ नहीं बोला। चुप ही बना रहा। मुझे लगा कि वह संकोच कर रहा है। इसलिए मैं उसे उत्साहित करने की कोशिश करने लगा। मैंने उससे निस्संकोच अपनी इच्छा प्रकट करने को कहा।

मेरे ज़ोर देकर पूछने पर फ्रिट्ज़ ने बताया कि वह यूरोप जाना चाहता है और वहां के बारे में अपनी जानकारी बढ़ाना चाहता है। मेरे सबसे छोटे बच्चे फ्रांसिस की इच्छा भी यही थी। वह भी फ्रिट्ज के साथ यूरोप जाना चाहता था। मुझे फ्रिट्ज़

और फ्रांसिस की इच्छा पर न आश्चर्य हुआ न गुस्सा आया। मैं जानता था कि जिन-जिन जगहों चीज़ों और लोगों की जानकारी मेरे और किताबों के द्वारा उन्हें अब तक मिलती रही है उनको सच्चे रूप में देखने की इच्छा स्वाभाविक है। लेकिन ऐसा नहीं था कि मैं और मेरी पत्नी को अपने बच्चों से मोह न हो। वह उनको अपने प्राणों से भी ज़्यादा प्यार करती थी। फिर भी जब मैंने उससे बात की तो उसने यही कहा, ''मेरा दिल अन्दर ही अन्दर बैठ भले ही जाए लेकिन मैं अपने बच्चों की राह मे रोड़े नहीं अटकाऊंगी। मेरे मोह से मेरे बच्चों की ज़िन्दगी का विकास ज़्यादा कीमती है।''

एलिज़ाबेथ की बातों से उनका बिछोह सहने की ताकत मेरे अंदर भी पैदा हो गई। हम सब फ्रिट्ज और फ्रांसिस की विदाई की तैयारी करने लगे। फ्रिट्ज और फ्रांसिस के अलावा जेनी भी जाना चाहती थी। उसे रोकने का तो हमें कोई अधिकार ही नहीं था। उसका पिता इंग्लैंड में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

इस प्रकार हमारे परिवार के तीन सदस्य लगभग जीवन-भर के लिए हमसे दूर जा रहे थे। लेकिन खुशी यही थी कि वे जीवन की राह पर आगे ही बढ़ रहे हैं। दूसरी बात यह थी कि उनकी स्थान-पूर्ति मि. वॉल्स्टन, उनकी पत्नी और पुत्री कर रहे थे।

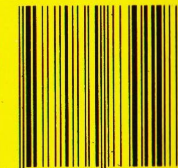
जिस दिन कप्तान लिटिलटन का जहाज़ जाने को था उससे पिछली रात हमारे परिवार का कोई भी व्यक्ति सो नहीं सका। अन्त में विदा की घड़ी भी आ गई। मैंने और एलिज़ाबेथ ने

फ्रिट्ज़ और फ्रांसिस और जेनी के माथे का चुम्बन लिया और उन्हें जीवन में सफलता प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया। जिस समय वे सब जहाज़ पर चढ़ गए और जहाज़ चलने को हुआ, हमारी आंखों में आंसू थे और हम तन-मन से अपने बच्चों के भावी जीवन की सफलता की कामना कर रहे थे।

□□□

किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels) (पुरस्कृत)
रॉबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe) (पुरस्कृत)
ख़ज़ाने की खोज में (Treasure Island) (पुरस्कृत)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio) (पुरस्कृत)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी ताबीज़ (Talisman)
तीसमार ख़ां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
क़ैदी की करामात (Count of Monte Christo)
डेविड कॉपरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ़ की रानी (Anderson's Fairy Tales)
रॉबिन्हुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबी डिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
काला घोड़ा (Black Beauty)
अद्भुत द्वीप (Swiss Family Robinson)
काला फूल (Black Tulip)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्राएं (20,000 Leagues Under the Sea)



शिक्षा भारती